



# आशीर्वाद

वार्षिक हिंदी पत्रिका 2021

अंक.34

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय  
महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय,  
एवं  
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय  
कर्नाटक, बेंगलूरु





प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय,  
महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय  
एवं  
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय  
कर्नाटक, बेंगलूरु

# आशीर्वाद

वार्षिक हिंदी पत्रिका - 2021

अंक - 34

## पत्रिका परिवार

### संरक्षक

श्रीमती शांति प्रिया एस  
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)  
श्री. अनूप फ्रांसिस डुंगडुंग  
महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)  
एवं

श्रीमती स्मिता गोपाल  
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)  
प्रकाशन परामर्शदात्री समिति

### अध्यक्ष

श्रीमती वर्षिणी अरुण  
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशा.)

### सदस्य

श्री.के.एस.करियप्पा  
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (बिल्स)

## संपादक मंडल

### संपादक

श्री. एस धनराजन,  
श्री. देव प्रकाश गुप्त  
प्रूफ रीडिंग  
कुमारी वंदना एस

सहयोग

राजभाषा परिवार के समस्त सदस्य

नोट : इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं तथा संपादक मंडल का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचना की मौलिकता तथा अन्य किसी विवाद के लिए रचनाकार स्वयं जिम्मेदार हैं।

| क्रम संख्या | शीर्षक                                     | विधा  | रचनाकार             | पृष्ठ संख्या |
|-------------|--|-------|---------------------|--------------|
| 01.         | सीएजी - चुनौतियों भरी सफलता                | लेख   | आरती प्रियदर्शिनी   | 09           |
| 02.         | मिथिला पेंटिंग                             | लेख   | संजीव चंद्र पाठक    | 11           |
| 03.         | पुत्र की चाहत                              | कहानी | पप्पू कुमार         | 13           |
| 04.         | बस नदी नहीं....वो गंगा है!                 | कविता | नूपुर कुमारी        | 16           |
| 05.         | हमसफर                                      | कहानी | आर्यन सिंह भदौरिया  | 19           |
| 06.         | कुछ दूर और                                 | कविता | प्रभात हंसदा        | 23           |
| 07.         | दि ग्रेट इंडियन किचन                       | लेख   | वंदना एस            | 25           |
| 08.         | महाप्राण निराला जी                         | कविता | संजय कुमार          | 28           |
| 09.         | 'शर्म' की नहीं,'गर्व' की भाषा है हिंदी     | लेख   | देव प्रकाश गुप्त    | 30           |
| 10.         | आपदा के वे तीन दिन                         | लेख   | बीना थॉमस           | 34           |
| 11.         | बारिश                                      | कविता | आरुषी श्रीवास्तव    | 37           |
| 12.         | ममतामई माँ                                 | कविता | सुशील कुमार पंडित   | 39           |
| 13.         | कार्य-जीवन संतुलन                          | लेख   | के. सुभाषिणी        | 41           |
| 14.         | ईमानदारी                                   | कहानी | दीपक कुमार सिंह     | 43           |
| 15.         | आज कहां है                                 | कविता | मदन पाल             | 45           |
| 16.         | दौरे-बचपन                                  | कविता | मयंक कुमार 'मयंक'   | 47           |
| 17.         | अंतर्द्वंद्व                               | कविता | मयंक कुमार 'मयंक'   | 49           |
| 18.         | चार सेर आटा                                | कहानी | अनुज गहलौत          | 51           |
| 19.         | अतिथि - तुम कब जाओगे?                      | लेख   | आरती प्रियदर्शिनी   | 53           |
| 20.         | देश में अब रोजगार नहीं                     | कविता | स्वामी दयानंद कुमार | 55           |
| 21.         | चलो सोचें कुछ बच्चों के लिए                | कविता | सुनील कुमार         | 57           |
| 22.         | परिश्रम का महत्व                           | लेख   | उमेश वर्मा          | 58           |
| 23.         | दादी का करिश्मा                            | कहानी | अनुज गहलौत          | 61           |
| 24.         | प्रकृति                                    | कविता | सुशील कुमार पंडित   | 63           |
| 25.         | महिला सशक्तीकरण : भारतीय परिप्रेक्ष्य में  | लेख   | आरती प्रियदर्शिनी   | 65           |
| 26.         | सभी का आदर करें                            | कहानी | मुकेश अंबानी        | 68           |
| 27.         | तिरंगा                                     | कविता | संजीव चंद्र पाठक    | 70           |
| 28.         | बंधन                                       | कविता | सुनील कुमार         | 71           |
| 29.         | कोरोना                                     | लेख   | रेखा मीणा           | 73           |
| 30.         | एकता में बल                                | कहानी | दीपक कुमार सिंह     | 74           |
| 31.         | दीप जलाएं                                  | कविता | सुशील कुमार पंडित   | 76           |
| 32.         | प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के प्राकृतिक तरीके | लेख   | मुकेश अंबानी        | 77           |
| 33.         | कर भला तो हो भला                           | कहानी | प्रभात हंसदा        | 81           |
| 34.         | जीवन सार                                   | लेख   | स्वामी दयानंद कुमार | 83           |



## संदेश

हमारे कार्यालय की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'आशीर्वाद' के 34वें अंक के ई-प्रकाशन से मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। हिंदी हमारे देश की राजभाषा है और कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना हम सभी का संवैधानिक दायित्व है। इस वर्ष की विषम परिस्थितियों में भी हिंदी पत्रिका का प्रकाशन हिंदी के प्रति बढ़ती रुचि एवं प्रेम को दर्शाता है।

मैं सभी रचनाकारों को बधाई देती हूँ और पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

शांति प्रिया एस

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)



## संदेश

यह अत्यधिक हर्ष की बात है कि हमारे कार्यालय की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'आशीर्वाद' के 34वें अंक का ई-प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में अहम भूमिका निभाने के साथ-साथ हमारे कार्यालय के कर्मिकों को अपनी सर्जन-क्षमता प्रदर्शित करने का अवसर भी प्रदान करती है। कार्यालयीन काम में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने एवं इस दिशा में अधिक से अधिक कर्मिकों को प्रेरित करने में इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण है।

जिन कर्मिकों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से 'आशीर्वाद' पत्रिका को समृद्ध किया है, मैं उन सभी रचनाकारों को तहे दिल से बधाई देता हूँ, क्योंकि उन्हीं के योगदान से 'आशीर्वाद' का प्रकाशन संभव हो पाया है। इसके अलावा, संपादक मंडल के सदस्य भी बधाई के पात्र हैं। मेरी कामना है कि आगामी वर्षों में भी यह पत्रिका मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक कृतियों से भरपूर होकर निर्बाध रूप से प्रकाशित होती रहे।

शुभकामनाओं सहित,

अनूप फ्रांसिस डुंगडुंग  
महालेखाकार (लेखापरीक्षा- II)



## संदेश

हमारी वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'आशीर्वाद' के 34वें अंक के ई-प्रकाशन के इस सुअवसर पर मुझे अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय में कार्यरत प्रतिभा संपन्न कार्मिकों को अपनी सृजनात्मकता प्रदर्शित करने का महत्वपूर्ण मंच प्रदान करती है। केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने और उसके प्रचार-प्रसार की ओर कार्मिकों को प्रेरित करने में गृह पत्रिकाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस कड़ी में 'आशीर्वाद' का श्रेष्ठ स्थान है।

इसके अलावा, जिन कृतिकारों ने अपनी रचनाएं देकर इस पत्रिका के प्रकाशन को संभव बनाया है, मैं उन सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल के सभी सदस्यों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए हार्दिक बधाई देती हूँ। उम्मीद करती हूँ कि इस पत्रिका के भावी संस्करण भी इसी तरह मनोरंजक, ज्ञानवर्धक और विचारोद्दीपक कृतियों से ओतप्रोत होकर सुधी पाठक को संतुष्ट करते रहेंगे।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

स्मिता गोपाल

स्मिता गोपाल

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

(केंद्रीय)



## संदेश

हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद' का 34वाँ अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यधिक हर्ष हो रहा है। पत्रिका का निरंतर प्रकाशन राजभाषा के विकास का सूचक है। कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद' ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच हिंदी के प्रति अभिरुचि बढ़ाने में प्रशंसनीय कार्य किया है। मुझे विश्वास है कि हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद' अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन पर पत्रिका परिवार को बधाई एवं पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य हेतु मेरी शुभकामनाएं।

वर्षिणी अरुण

वर्षिणी अरुण

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशा.)

## संपादकीय

साहित्य-सृजन का लक्ष्य मात्र किसी विषय के वर्णन तक सीमित नहीं है, अपितु उस विषय की पृष्ठभूमि में कार्यरत एक समाज-विशेष की पहचान से भी उसका संबंध है। समाज एक ऐसा तत्व है जिसमें संस्कृति-सभ्यता के रंग भी हमें देखने को मिलते हैं। साहित्य में आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति होती है, ऐसी अभिव्यक्तियाँ जो कभी-कभी अन्य कहीं व्यक्त नहीं हो पाती हैं। रचनाकार और समाज के बीच गहरा रिश्ता हमेशा मौजूद रहा है। चूंकि समाज से कटकर रचनाकार या रचना का कोई सामाजिक अस्तित्व नहीं होता है, इसीलिए जब कभी भी किसी रचना का पाठ हम करते हैं तो उसमें छुपा समाज प्रकट होता है। केवल समाज ही नहीं, उस समाज-विशेष की संस्कृति से, भौगोलिक तथा भाषागत विशेषताओं से भी वह रचना हमें परिचित कराती है। स्मृति से भी इन रचनाओं का गहरा संबंध होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि अनुभव दो तरह के होते हैं- सामान्य और विशेष। सामान्य अनुभव तो हर कोई भूल जाता है, मगर जो विशेष होते हैं, वे हमेशा स्मृति-पटल पर छाए रहते हैं, जो किसी दिन रचना बनकर विशेष अभिव्यक्ति के रूप में हमारे सामने आते हैं।

विविधता में एकता को सीने से लगाकर चलना भारतवासियों की विशेषता है। यहाँ पर लोग संस्कृति की अनेकता के साथ एकता में विश्वास रखते हैं, चाहे वह भाषा हो, खान-पान हो, या रहन-सहन। एक ऐसा देश जहाँ पर विभिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं,



देव प्रकाश गुप्त (हिं.अ.)

पर सबसे अधिक बोली-पढ़ी व लिखी जाने का श्रेय हिंदी को ही प्राप्त है। इसका कारण यह है कि हिंदी अत्यंत सहज, सरल, वैज्ञानिक एवं बोधगम्य भाषा है और इसीलिए सब इसे आसानी से ग्रहण कर लेते हैं। आज हिंदी भाषा का प्रयोग काफी क्षेत्रों में विकसित हुआ है, चाहे वह तकनीकी स्तर पर हो या फिर कोई अन्य स्तर पर।

यह अत्यंत गर्व की बात है कि हमारे कार्यालय की हिंदी गृह ई-पत्रिका 'आशीर्वाद' के 34वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। उत्तर से लेकर दक्षिण तक तथा पश्चिम से लेकर पूर्व तक के रचनाकारों की प्रतिभा आपको इसमें देखने को मिलेगी। ये ऐसी रचनाएँ हैं, जो उनके स्मृति-पटल पर छाई हुई थीं और विशेष अभिव्यक्ति बनकर इस पत्रिका के माध्यम से अब आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। इस पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हम धन्यवाद देते हैं जिन्होंने अपनी रचनात्मक प्रतिभा के माध्यम से मन के भावों को शब्दों के धरातल पर उतार कर नवीनतम और श्रेष्ठ रचनाओं को आप तक पहुंचाने का प्रयास किया। सुधी पाठक-गण से अनुरोध है कि वे अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें अवगत कराएं जिससे कि हमारी पत्रिका श्रेष्ठ एवं गुणवत्तापूर्ण बन सके। पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए....



एस धनराजन (हिं.अ.)



“भारत का नियंत्रक और महालेखापरीक्षक संभवतः भारत के संविधान का सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी है। वह ऐसा व्यक्ति है, जो यह देखता है कि संसद द्वारा अनुमन्य खर्चों की सीमा से अधिक धन खर्च न होने पाए या संसद द्वारा विनियोग अधिनियम में निर्धारित मदों पर ही खर्च किया जाए”- डॉ. भीमराव अंबेडकर का यह वक्तव्य भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की महत्ता को वास्तविक रूप से दर्शाता है। 1858 में स्थापित महालेखाकार कार्यालय को 1884 में भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का नाम दिया गया था। प्रारंभ में यह सरकार के नियंत्रण में काम करने वाली संस्था थी। भारत सरकार अधिनियम 1919 के तहत महालेखापरीक्षक को सरकारी नियंत्रण से मुक्त करके वैधानिक दर्जा दिया गया। आज़ादी के बाद राष्ट्रपति द्वारा सी.ए.जी. की नियुक्ति के प्रावधान एवं 1971 में केंद्र सरकार द्वारा लागू नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (कर्तव्य, शक्तियां और सेवा की शर्तें) अधिनियम लागू होने के बाद सी.ए.जी. अपने वर्तमान प्रारूप में आया। इस प्रकार भारत को एक बड़ी और विश्वसनीय संस्था मिली, जो

भारत की संचित व आकस्मिक निधि के सजग प्रहरी के रूप में काम करने लगी।

सीएजी की शक्तियों और इसकी कार्यप्रणाली से हम सभी अवगत हैं। ऐसी संस्था के लिए काम करना अपने आप में एक गर्व की अनुभूति देता है। इस बात से इस संस्था में कार्यरत मेरे सभी सहकर्मी अवश्य सहमत होंगे कि हममें से प्रत्येक छोटे से छोटे योगदान से ही सही, किंतु देश को एक अभूतपूर्व सेवा दे रहे हैं। परंतु कई मामलों में ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे हाथ बंधे हुए हैं। भारत में संघ और राज्यों के खातों के ऑडिट का काम वास्तव में “भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग (आई.ए. एंड ए.डी.)” के अधिकारी और कर्मचारियों द्वारा किया जाता है। परंतु भारत में आईए एंड एडी के कार्य को वैधानिक मान्यता नहीं है, जैसा कि ब्रिटेन के “राष्ट्रीय लेखापरीक्षा कार्यालय” (National Audit Office) में होता है। इसके अतिरिक्त भी सीएजी के सामने कई जटिल चुनौतियाँ विद्यमान हैं जैसे कि:-

सी.ए.जी. को किसी भी सरकारी कार्यालय का निरीक्षण और किसी भी खाते को मांगने का अधिकार है,

लेकिन व्यावहारिक तौर पर ऐसा नहीं हो पाता। इसके अलावा ऑडिट में बाधा डालने के उद्देश्य से कई बार महत्वपूर्ण दस्तावेजों की आपूर्ति ऑडिट प्रक्रिया के अंत में की जाती है। साथ ही, सी.ए.जी. की नियुक्ति के लिए कोई मानदंड या प्रक्रिया संविधान में निर्धारित नहीं है और यह कार्यपालिका के पास है कि वह अपनी पसंद के व्यक्ति को इस पद पर बैठा सकती है। इस तथ्य पर हमारे पूर्व सी.ए.जी. श्री. विनोद राय ने एक सुझाव भी दिया था कि नया सी.ए.जी. चुनने के लिए मुख्य सतर्कता आयुक्त की तरह ही एक "कॉलेजियम तंत्र" होना चाहिए। साथ ही, सी.ए.जी. के दायरे में सभी निजी-सार्वजनिक सहभागी (पी.पी.पी.), पंचायती राज संस्थानों और सरकार द्वारा वित्तपोषित संस्थानों को भी लाना चाहिए, जो कि अभी तक इनके कार्यक्षेत्र से परे हैं।

इन तथ्यों से यह तो स्पष्ट है कि सी.ए.जी. की राह बहुत काँटों भरी है, जिसमें प्रत्येक पग पर नई

चुनौतियाँ खड़ी हैं। किंतु इन विषम परिस्थितियों में भी सी.ए.जी. ने अभूतपूर्व कार्य किया है। बिग डाटा क्रांति के मददे नज़र सी.ए.जी. ने 2016 में "बिग डाटा मैनेजमेंट पॉलिसी" के साथ काम किया तथा दिल्ली के "डाटा मैनेजमेंट एंड एनालिटिक्स" के लिए एक केंद्र भी स्थापित किया। इसके अतिरिक्त सी.ए.जी. ने संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय का सफलतापूर्वक ऑडिट किया, जिसमें विविध जटिल कार्य शामिल थे। यह भारत के सी.ए.जी. की विश्वसनीयता को दर्शाता है और मुझे इस बड़ी सी संस्था का एक छोटा-सा हिस्सा होने पर बहुत गर्व है। यह गर्व हममें से प्रत्येक को होना चाहिए और हमें यह दृढ़ संकल्प लेना चाहिए कि चाहे जितनी भी चुनौतियाँ हमारे मार्ग में क्यों न हों, सी.ए.जी. अपनी सफलता की यात्रा में अनवरत बढ़ता रहेगा।



आरती प्रियदर्शिनी  
वरिष्ठ लेखापरीक्षक  
(प्र.नि.ले.प.(कें.))



मिथिला पेंटिंग भारतीय पेंटिंग की एक प्रचलित शैली है, जो बिहार राज्य के मिथिला क्षेत्र में उत्पन्न हुई। यह पेंटिंग मधुबनी पेंटिंग के नाम से भी जानी जाती है। इस पेंटिंग में मुख्यतः प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल किया जाता है। प्राकृतिक रंग पौधों की पत्तियों और चावल को पीसकर तैयार किया जाता है। इसमें धार्मिक कलाकृतियों तथा प्राकृतिक दृश्यों को भी दर्शाया जाता है।

मिथिला पेंटिंग में मुख्यतः पाँच भिन्न रूप देखने को मिलते हैं - भरवी, कचनी, तांत्रिक, गोदना और शोहवर। मिथिला पेंटिंग में राम-सीता विवाह के विभिन्न दृश्यों को भी दर्शाया जाता है। यह पेंटिंग भौगोलिक रूप से पूरे बिहार में प्रचलित है। आज के कोरोना काल में पेंटिंग के कलाकार मास्क पर भी अपनी पेंटिंग को प्रदर्शित कर आजीविका चला रहे हैं।

आज भी बिहार राज्य के मैथिल बहुल क्षेत्रों में किसी भी शुभ कार्य में, जैसे विवाह, उपनयन आदि में मिथिला पेंटिंग से सजावट की जाती है। पर्व-त्योहारों में भी मिथिला पेंटिंग द्वारा सजावट की जाती है। बिहार सरकार द्वारा इसको राज्य स्तरीय पुरस्कार दिया गया। रेलवे ने मिथिला पेंटिंग के महत्व को समझते हुए अनेक ट्रेनों की बोगियों को मिथिला पेंटिंग से सजाया है। मधुबनी रेलवे स्टेशन पूरी तरह मिथिला पेंटिंग से सुसज्जित होकर अपनी पहचान विश्व स्तर पर बना रहा है। रेलवे द्वारा और भी रेलवे स्टेशनों को मिथिला पेंटिंग से सुसज्जित करने का प्रयास किया जा रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने इस वर्ष मन की बात कार्यक्रम में मिथिला पेंटिंग से बने मास्क के बारे में बताया था। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे मिथिला के लोग इस विषम परिस्थिति में भी अपने हुनर को मास्क पर पेंटिंग के रूप में उकेरकर अपनी रोजी-रोटी चला रहे हैं। बिहार के मधुबनी शहर में अनेक प्रशिक्षण केंद्र मिथिला पेंटिंग का प्रशिक्षण दे रहे हैं। सर्वप्रथम जगदंबा देवी राष्ट्रीय पुरस्कार पाने वाली कलाकार 'मिथिला पेंटिंग' की थी। 1975 में राष्ट्रपति ने जगदंबा देवी को पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया था। उसके बाद मिथिला पेंटिंग की अनेक कलाकृतियों को राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाज़ा गया। मिथिला पेंटिंग की पहचान विदेशों में भी है। जापान, मलेशिया में लोग मिथिला पेंटिंग के प्रशंसक हैं। जापान में तो मिथिला पेंटिंग से सुसज्जित एक संग्रहालय भी है।

मिथिला पेंटिंग को और आगे बढ़ाने के लिए केंद्र और राज्य सरकार दोनों को प्रयास करने होंगे। इससे जुड़े कलाकारों को समुचित रोज़गार और अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराने होंगे। मिथिला पेंटिंग के

प्रशिक्षण केंद्र गाँव-गाँव में खोलने होंगे। अगर सरकार इन मूलभूत आवश्यकताओं पर ध्यान दे तो मिथिला पेंटिंग एक बहुत बड़ा व्यावसायिक केंद्र बन जाएगी, साथ ही यह हमारी सभ्यता और संस्कृति को भी गौरवमय बनाएगी।



संजीव चंद्र पाठक  
स.ले.प.अ./ऑडिट-II

/



जून का महीना था, सूर्य की किरणें समकोण की ओर बढ़ रही थीं, धरती का तापमान भी बढ़ रहा था, बादल आकाश में लुका-छिपी खेल रहे थे। इस उमस भरी गर्मी में शंकर अपनी बड़ी बेटी शीतला के साथ खेतों में काम कर रहा था। दूसरी बेटी विमला भी खेतों में इधर-उधर भाग-दौड़ कर अपने पिता का हाथ बंट रही थी। शंकर की पत्नी महेश्वरी, तीसरी बेटी कमला, जो चार वर्ष की थी, के साथ पेड़ की छाँव में अपने पति और बेटियों का खाना लिए इंतजार कर रही थी। कमला ने पेड़ की छाँव से ही आवाज़ दी ' बापू खाने आ जाओ, मम्मी की तबीयत ठीक नहीं है'। महेश्वरी गर्भवती थी, आठवां महीना चल रहा था, उसे एक बेटे की चिंता हमेशा लगी रहती थी, तीन बेटियों की माँ महेश्वरी सांवली और कमज़ोर भी हो गई थी। कमला की आवाज़ सुनकर शंकर

काम रोक कर बेटियों के संग पेड़ की छाँव की ओर खाने को चल दिया ।

शंकर एक मध्यवर्गीय किसान था, उसके पास एक बीघा खेती की ज़मीन थी। वह एक भोला-भाला इंसान था, जो ग्रामीण परिवेश की सामाजिक संरचना में बहुत खुश रहता था। उसका कोई पुत्र नहीं था, जो उसके धन का वारिस हो, जिस कारण वह दुःखी रहता था। वह सुन चुका था कि पुत्र के हाथों दाह-संस्कार होने से मानव को मोक्ष की प्राप्ति होती है। 40 की उम्र में शंकर बूढ़ा दिखने लगा था, चेहरे पर झुर्रियां पड़ गई थीं, आँखों के नीचे काले-काले धब्बे हो गए थे और भीतर की तरफ धंस गई थीं। इस बार शंकर को विश्वास था कि उसे उसका वारिस मिल जाएगा, क्योंकि किसी महात्मा की सलाह पर तिरुपति और रामेश्वरम की यात्रा कर आया था।

महेश्वरी घर में प्रसव पीड़ा से कराह रही थी, शीतला जाकर अपने गांव की "दाई" को बुला लाई, जो प्रसव कराने में निपुण थी। शंकर बड़ी बेचैनी से दरवाजे पर चहलकदमी करते हुए मन ही मन भगवान से प्रार्थना कर रहा था कि इस बार पुत्र की प्राप्ति हो जाए। लंबी प्रसव पीड़ा के बाद महेश्वरी ने एक पुत्र को जन्म दिया। यह खुशखबरी सुनकर शंकर खुशी से झूम उठा और सबको मिठाई खिलाई। पंडित जी को बुलाकर लड़के का नाम 'संतोष' रखा।

बदलते समय के साथ शंकर समझ गया था कि किसान कितना भी जी तोड़ मेहनत करे, कर्ज से छुटकारा नहीं मिलेगा। संतोष जब 10 वर्ष का हुआ तो शंकर उसे पढ़ाई के लिए शहर भेज दिया। अपने बेटे की अच्छी पढ़ाई के लिए उसे अपना खेत गिरवी रखना पड़ा, लेकिन उसकी पढ़ाई में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं होने दी। संतोष छात्रावास में रहकर पढ़ाई करने लगा, वह एक तीक्ष्ण बुद्धि का मेहनती लड़का था। पढ़ाई समाप्त होने के बाद शहर में ही उसकी सरकारी नौकरी लग गई।

गांवों में आज भी संयुक्त परिवार की महत्ता है जबकि शहर में एकल परिवार की। शहर आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण है जबकि गांव आज भी इन सब सुविधाओं से वंचित है। संतोष शहर में लंबे समय से रह रहा था, इसलिए उसका मन गांव में अब नहीं लगता था। सरकारी बाबू बनने के बाद उसकी शान-शौकत और बढ़ गई थी। वह बड़े चैन से शहरी जीवन जीने में मशगूल था। कार्यालय में संतोष रौब झाड़ता था, जैसे कि वह किसी बड़े घर का बेटा हो।

संतोष को रहने के लिए शहर में सरकार की तरफ से आवास मिला था। साथ में कार्यालय आने-जाने के लिए सरकारी गाड़ी मिली हुई थी। गाँव वाले जब शहर जाते थे

तो संतोष की ठाट-बाट देखकर उन्हें विश्वास ही नहीं होता कि वह शंकर किसान का बेटा है। गांव वाले जब शंकर को उसके बेटे की शान-शौकत के बारे में बताते हैं तो इसका सीना गर्व से चौड़ा हो जाता था।

एक दिन शंकर का मन अपने बेटे से मिलने के लिए लालायित हो उठा। धोती कुरता पहन कर वह अपने बेटे से मिलने शहर के लिए निकल पड़ा। कार्यालय पहुंचने पर चपरासी उसे साधारण किसान समझ कर डाँटते हुए बोला, क्या काम है? साहब अभी बहुत व्यस्त हैं बाद में आना। शंकर उसे बोला कि अपने साहब से जाकर बोलो कि उसके गांव से 'शंकर' आया है। वह मन ही मन सोच रहा था कि उसका बेटा आकर उसका पैर छूकर प्रणाम करेगा। तब चपरासी को मालूम होगा कि यह साधारण किसान उसके साहब के पिता हैं। चपरासी ने जाकर संतोष को सूचना दी। संतोष ने सोचा कि अगर मैं सबके सामने अपने पिता से मिला तो सबको मालूम हो जाएगा कि मैं एक साधारण किसान का बेटा हूँ और मेरी इज्जत में कमी आ जाएगी। यह सोच कर वह चपरासी से बोला- 'वह मेरा नौकर है, उसे मेरे आवास पर जाने के लिए बोलो, शायद मेरे पिताजी ने कुछ काम से उसे भेजा हो'।

किवाड़ खुला होने के कारण संतोष की आवाज़ शंकर के कानों तक पहुँच चुकी थी। यह सब सुनकर उसके पैरों के नीचे की ज़मीन खिसक गई, उसकी आशाओं पर पानी फिर गया। शंकर सुबह का घर से निकला था, उसे भूख और प्यास भी लगी थी। उसे ज़ोरों का सदमा लगा और वहीं गश खाकर गिर पड़ा। लोग शंकर की तरफ दौड़े, शोरगुल सुनकर संतोष भी बाहर आया। अपने पिता की हालत देख कर बिलख-बिलख कर रोने लगा। अपनी बातों पर संतोष को पछतावा हो रहा था। लोगों को सारी बातें समझ में आ गई थीं, लोग

घृणित नज़रों से संतोष को देख रहे थे। संतोष अपने पिता को उठाने की कोशिश कर रहा था, पर शंकर मर चुका था।



पप्पू कुमार  
स.ले.प.अ.  
प्र.म.ले.(ले.प.-I)



कर जोड़े थे उस राजा ने, माँ संग चलना स्वीकार करो,  
श्राप लगा है वंशज पर, उनपर थोड़ा उपकार करो।

नृप के आंगन हुआ अश्वमेध, वो अश्व तीव्रगति भागा था,  
जब दिखा न वो दिवसों तक तो, मन में संशय तो जागा था।

पुत्रों ने पता लगाया था, किसी ऋषि ने अश्व चुराया था,  
इस सत्य से वो अनजान रहे, वहां अश्व छोड़ कोई आया था।

लड़कों ने उसे जगाया था, बल से उसको डराया था,  
जो पाप किया नहीं ऋषि ने, उसका दोषी ठहराया था।

लेकर आया था कोई उसे, पुरखों के पाप को हरने को  
होकर तैयार खड़ी थी वो, शिव के बालों से बिखरने को।

यह किस्सा ज़रा पुराना है, श्रम त्याग का ताना बाना है,  
जो लिख बैठा था कल कोई, उसे सबको अभी सुनाना है।

राजन ने भेजा पुत्रों को, पता लगाओ कौन है वो,  
साहस कर बैठा मेरे विरुद्ध, क्यों अश्व चोर अब मौन है वो।

वह योगी योग में लीन-सा था, आँखें मूंदे तल्लीन सा था,  
जो घट रहा उससे परे वो, जाने कैसे अंतर्लीन सा था।

संन्यासी को क्रोध था आया, नेत्रों ने रोष दिखाया,  
उस वैरागी के तप बल से, कहां कोई कभी बच पाया।

कहा मुनि ने ऐसा था, तुम राख यहीं हो जाओगे,  
मुक्ति आएगी निकट तभी, जब गंगा से मिल पाओगे।

प्रश्न यही बस मन में था, कैसे गंगा अब आएगी,  
मंदाकिनी बुलाने को, सब ने आवाज़ लगाई थी।

मास वर्ष तो बीत गए, कितनों ने कई प्रयास किए,  
ब्रह्मा तो खुश होने से रहे, बुझ बैठे थे आशा के दिए।

इतिहास लिखा है वीरों ने, हर मुश्किल को आसान किया,  
गंगा धरती पर आएगी, था उसने यह ठान लिया।

अपने तप-त्याग-तपस्या से, उसने ब्रह्मा को जीत लिया,  
वर मांगे उससे पहले ही, वर्णन अपना अतीत किया।

माता को लेने आया हूँ, प्रभु ऐसा वर अब दान करें,  
साथ उन्हें ले जा पाऊँ, इस भक्त का यूँ कल्याण करें।

कठिन कार्य तो यह था कि, कैसे वो धरा तक आएगी,  
वो शांत नहीं चंचल-सी थी, क्या बांधे वो बंध जाएगी।

वो श्वेत धवल निर्मल-सी थी, थोड़ी नटखट चपल-सी थी,  
था प्रवाह ऐसा उसका, किसी भीषण दावानल-सी थी।

तर्क बुद्धि सब लगा हारे, पर इसका कोई समाधान न था,

राजा के पुत्रों की यही गति, अग्नि के ताप में झुलस गए,  
अब मन ही मन पछताते थे, क्यों तपस्वी से उलझ गए।

जो मुश्किल आ पहुंची है, अब ब्रह्मा ही आसान करेंगे,  
हृदय की इच्छा जो भी है, उसका अब वही सम्मान करेंगे।

नियति तो सबकुछ जानती है, किसी को तो उसने चुना होगा  
इक्ष्वाकु का राजा वो, भागीरथ नाम सुना होगा।

पर्वत जैसा उसका निश्चय, हार न उसने मानी थी,  
गंगा उसके लिए प्राण जैसी, औरों के लिए जो पानी थी।

प्रभु द्वार तुम्हारे हूँ, मन में ऐसा विश्वास लिए,  
मिल जाएगा वो मुझे आज, थे बरसों से जो आस किए।

ब्रह्मा मन ही मन हर्षाए, था भक्त ने ऐसा काम किया,  
धरती के पाप को धोने को, गंगा का आज था दान किया।

चलती थी आंधी के जैसी, वो नदी ज़रा अलबेली सी,  
कैसे वो धरती आएगी, यह तो अबूझ पहेली थी।

भूधर जैसी कभी हो कठोर, कब फूलों सी कोमल हो जाती है,  
एक शिशु के जैसी वो हठी, जाने कब माँ बन जाती है।

बलशाली उस सौदामिनी को, धरा सह पाए आसान न था।

अब तो बस वो राह दिखाए, जो भोला कैलाशी था,  
रहकर भी संसार में जो, सबसे बड़ा संन्यासी था।

वसुधा पर आई वो ऐसे, जैसे नया पुराना किस्सा हो,  
धरती को छुआ ऐसे था, जैसे जन्म-जन्म से हिस्सा हो।

धारा उसकी इतनी उज्ज्वल, मणि की प्रभा भी फीकी थी,  
सबको माँ-सा स्वीकार किया, कला ये भी उसने सीखी थी।

गंगा द्वार आई उनके, सबको उसने स्वीकारा था,  
आँचल में भरा इक पल में ही, न पूछा क्या दोष तुम्हारा था?

त्रेतायुग में उद्धार किया, द्वापर तक चलके आई थी,  
कभी राम के वंशज ताड़े थे, कभी भीष्म की माँ कहलाई थी।

कोई लिख पाए उसकी गाथा, नहीं आज अभी तक जन्मा है,  
बिना जन्म दिए सबकी जननी, बस नदी नहीं.... वो गंगा है।

जिसका रूप इतना रौद्र हो, उसे रुद्र ही साधेगा,  
खोल वो अपनी जटाएं, उसमें गंगा को बांधेगा।

धारण कर उसको मस्तक पर, शिव ने सबका उद्धार किया,  
भार उठाकर गंगा का, था सबका बेड़ा पार किया।

पर्वतराज हिमालय ने स्वागत में पलकें बिछाई थीं,  
जो स्वर्ग से उतरी देव नदी, वह उनकी ही परछाई थी।

आगे-आगे भागीरथ जाए, पीछे-पीछे भागीरथी,  
जो राख बने बैठे थे, मुक्ति की उनमें आस जगी।

वो पवित्र बस वैसे ही, जैसे राधा का कन्हैया है,  
भरती बाहों में सबको ऐसे, जैसे यशोदा मईया है।

अभी तक उसकी यही नीति, नहीं रीति उसने बदली है,  
धोए उनके भी पाप सभी, जो करते उसको मैली हैं।



नूपुर कुमारी  
कनिष्ठ अनुवादक  
म.ले.(ले.प.-II)



आज ज्योति के रिश्ते की बात चल रही थी तो समूचा परिवार आशा के दीप जलाए खुशियों का इंतज़ार कर रहा था, और वहीं दूसरी ओर ज्योति के मन में असमंजस की लहरें दौड़ रही थीं, वह निरंतर सोच रही थी कि लड़के वाले क्या कहेंगे और अगर उन्होंने हां कर दिया तो वह दीपक को क्या जवाब देगी? दीपक और ज्योति दोनों एक ही शहर के थे और उनकी मुलाकात एक शादी में हुई थी। भोजन को लेकर शुरू हुई एक आम बात-चीत कब जीवन के फैसले लेने तक आ पहुंची, वह दोनों समझ ही न पाए। अभी एक दूसरे को जानते हुए कुछ महीने ही हुए थे, परंतु ज्योति को ऐसा लग रहा था कि जैसे वह दीपक को वर्षों से जानती है और दीपक की हालत भी कुछ ऐसी ही थी। अब उनके दिन का एक बड़ा हिस्सा एक दूसरे से बातें करने में गुज़र रहा था और उन्होंने जीवन भर एक साथ रहने का फैसला किया।

उन्होंने कसम खाई कि बचे हुए जीवन को वह हमसफर, हमराही बनकर पार करेंगे, जीवन पर्यंत एक दूसरे की खुशियों और दुखों में शरीक रहेंगे। परंतु इस रिश्ते की बात ने उन कसमों और वादों पर प्रश्न चिह्न लगा दिया था। ज्योति ने सोचा कि वह अपने घर वालों से बात करेगी। पर इससे पहले वह कुछ कह पाती, लड़के वालों का फोन आया और घर में खुशी की लहर दौड़ उठी। कुछ दिनों तक सोचते-विचारते रहकर उसे यह लगने लगा था कि यह शादी करना ठीक नहीं है। उसके मन में बारंबार एक ही विचार आ रहा था कि प्रेम किसी और से और शादी किसी और से, यह पाप होगा वह अपने साथ दो ज़िंदगियाँ बर्बाद कर रही थी।

एक दिन साहस करके ज्योति ने घरवालों को दीपक के बारे में बताया और विवाह प्रस्ताव रखा। परंतु

घरवालों ने दीपक को दूसरी जाति के होने का हवाला देकर खुले शब्दों में इंकार कर दिया। ज्योति पहले से ही जानती थी कि दीपक का नीची जाति का होना हमारे विवाह में एक बाधा बनकर सामने आएगा। अब ज्योति के लिए परीक्षा की घड़ी आ गई थी। वह रोज़ एकांत में बैठकर मन की तराजू में एक ओर मां-बाप की खुशियां और उनका सम्मान रखती तो दूसरी ओर दीपक को किए गए कसमें और वादे और उसके साथ अपने शेष समूचे जीवन की खुशियां रखती, जो दीपक के रूप में उसे मिलने वाली थी और हर बार तराजू का दूसरा पलड़ा नीचे की ओर झुक जाता। परंतु बेटियां घर का गौरव और अभिमान ऐसे ही नहीं कहलातीं, ज्योति ने भी अपनी खुशियां दरकिनार करते हुए मां-बाप के सम्मान का ख्याल किया और न चाहते हुए भी उनके कहे अनुसार शेखर से शादी कर ली। विदा होकर ज्योति ससुराल आई, घरवालों ने बहू की आवभगत की और सारी रस्में निभाईं और बहू को शेखर के कमरे में आराम करने को भेज दिया।

अभी रात हो चुकी थी। ज्योति दीपक के बारे में सोच रही थी कि तभी शेखर शराब के नशे में मगरूर सिगरेट का कश लेकर धुआं उड़ाते हुए कमरे में पहुंचा और ज्योति के होठों पर सिगरेट स्पर्श कराते हुए बोला -“सो गए क्या!” ज्योति अचानक से उठ खड़ी हुई, सिगरेट की लौ से ज्योति जलन की पीड़ा महसूस कर रही थी, तभी शेखर ने ज्योति को अपनी बांहों में खींचा और संपूर्ण शक्ति से बिस्तर पर पटक दिया अब मानो कि शराब की लत में शेखर के हृदय में मानवता बची ही नहीं थी। उसने हैवानों की तरह ज्योति के शरीर पर नाखूनों और दांतों से प्रहार करना प्रारंभ कर दिया। ज्योति असहनीय पीड़ा महसूस कर रही थी। आज आंखों से मोती की धारा नहीं पीड़ा का समंदर बह रहा था और इस समंदर ने ज्योति के आँचल को जलमग्न कर

दिया। रात में ज्योति ठीक से सो नहीं पाई तो सुबह उठने में थोड़ी देर हो गई थी। सास और ससुराल वालों ने भला बुरा कहा। सारे दिन नाच-गाना हुआ जिससे ज्योति थकान से असहाय महसूस कर रही थी। अब रात हो रही थी और ज्योति के मन में बेचैनी बढ़ती जा रही थी। ज्योति अपने घर वालों और दीपक को याद करके सिसक रही थी कि इतने में शराब की लत में चूर शेखर आ पहुंचा और सम्मोहन का जाल डालने लगा। ज्योति उसकी आंखों में छुपी वासना को पहचान गई और प्यार से बोली - “आज बहुत थक गए हैं। हम लोगों को सो जाना चाहिए”। लेकिन शेखर को यह अपनी मर्दानगी की तौहीन लगी और वह मारपीट पर उतर आया। उसे कमरे में जो दिखा उससे ज्योति पर प्रहार किया और बिस्तर पर फेंक दिया। बिस्तर पर गिरते समय ज्योति के पेट में बेड का कोना लग गया, जिससे वह लहलुहान हो गई। शेखर की यातनाओं से वे सिसकियां अब रुदन में बदल गई थीं। उसका चांदनी जैसा दूधिया रंग अब नीलकंठ के कंठ से भी ज्यादा नीला हो गया था। परंतु शेखर की यातनाएं कम न हुईं। अभी चौथी में 3 दिन बाकी थे। हाथों की मेहंदी धूमिल भी न हुई थी, लाल-लाल चूड़ियों और कंगनों से भरे हाथ छन-छन कर रहे थे, पायलों की मधुर आवाज़ अभी मीठी ही लग रही थी। मांग का सिंदूर अभी धुला तक न था इससे पहले ही उसका संसार उजड़ गया।

सूचना मिली कि शेखर का झगड़ा हुआ है और झगड़े में उसे गोली लगी जिससे उसका देहांत हो गया। यह खबर सुनते ही घर में शोक का माहौल छा गया सभी ने ज्योति को दोष दिया और डाइन, नागिन जैसी उपमाएं दे डालीं। सास ने यहां तक कह दिया कि “हमाए लल्ला को जई डायन खाए गई”। ज्योति अपनी किस्मत को कोस-कोस कर रो रही थी कि तभी सास ने उसे धक्का देकर घर से निकाल दिया। ज्योति का भाई आया और

उसे अपने साथ घर ले गया। घर पर भी आस-पड़ोस की महिलाएं विलाप कर रही थीं और ज्योति को सांत्वना दे रही थीं।

अभी काफी समय बीत चुका था। ज्योति बाज़ार से कुछ सामान लेने गई थी। वहां उसकी मुलाकात पुनः दीपक से हुई और दीपक उसे सफेद वस्त्रों में देखकर अचंभित हो गया। अभी ज्योति घर पहुंची भी नहीं थी कि दीपक ने फोन लगा दिया और उनकी बात कुछ ही दिनों में पहले जैसी होने लगी। दीपक फिर से अपनी ज्योति संग जल जाने को बेताब था और इस बार ज्योति के घर वालों ने भी बेटी की खुशियों को प्राथमिकता दी। लेकिन अब दीपक का परिवार एक विधवा को स्वीकार करने को तैयार नहीं था। दीपक ने परिवार को दरकिनार करके एक असहाय विधवा प्रेमिका का हाथ थामना अपना धर्म समझकर उससे विवाह कर लिया और एक नए सफर पर हमसफर बनकर चल दिए। दीपक जब ज्योति को घर ले गया तो परिवार वालों ने दीपक को बेघर कर दिया। अब दीपक के सामने रहने के साथ-साथ कामकाज की समस्या आ खड़ी हुई और जैसे-तैसे उसने इन कठिन परिस्थितियों में खुद को और अपने नए परिवार को संभाला। अब वह खुशी-खुशी एक किराए के घर में रहता है और जीवन निर्वाह के लिए सब्ज़ी की ठेली लगाने लगा। उनके विवाह के 7 साल गुज़र चुके थे। परंतु घर बच्चों की किलकारी के बिना सूना लगता था। ज्योति ने हर मंदिर और मजार में प्रार्थना की और डॉक्टरों को भी दिखाया पर कोई सफलता नहीं मिली। आस-पड़ोस की महिलाएं भी उसे बांझ और कुलटा पुकारने लगी थीं जो ज्योति के खुशहाल जीवन में एक नई पीड़ा बनकर आई। बड़ी मन्नतों के बाद ज्योति गर्भ से थी, वह मां बनने वाली थी, घर में एक बार फिर से खुशियों ने दस्तक दी थी। अब बच्चे के जन्म लेने का समय आ गया था। रात के करीब

2:00 बज रहे थे कि ज्योति को पेट में पीड़ा महसूस होने लगी। उसने दीपक को आगाह किया, दीपक ने अस्पताल ले जाने के लिए आसपास साधन की खोज की, किंतु जब कोई साधन सुलभ न हुआ तो उसने आनन-फानन में अपनी सब्ज़ी के ठेले पर ही ज्योति को लिटाकर अस्पताल की ओर रुख कर लिया। ज्योति दर्द से बेहाल हो रही थी और उसके गले से आवाज़ ठीक से नहीं निकल रही थी। फिर भी वह दीपक से यह कह रही थी कि “दीपक मुझे कुछ भी हो, मेरी परवाह मत करना, पर इस बच्चे को तुम बचा लेना और मेरे न रहने पर इसका ख्याल रखना”। दीपक निरंतर ज्योति को समझा रहा था कि ऐसा कुछ नहीं होने वाला है, मैं तुम्हें कुछ नहीं होने दूंगा। हम एक ही मंज़िल के राही हैं, हम साथ में ही जिएंगे और साथ में ही.....। पर ज्योति की आंखों से आंसू की धाराएं रुकने का नाम नहीं ले रही थीं। वह दर्द से परास्त होकर बेहोश हो चुकी थी। जैसे-तैसे वह अस्पताल पहुंचा और डॉक्टरों ने तत्परता दिखाई तो कुछ ही पलों में शुभ समाचार सामने आया कि ज्योति और उनका बेटा दोनों ही ठीक हैं और चिंता की कोई बात नहीं है। घर में बच्चे की खिल-खिलाहट से नाना प्रकार की खुशियां लौट आई हों। मानो घर अब स्वर्ग-सा प्रतीत हो रहा था। धीरे-धीरे बच्चा बड़ा हुआ और बड़ी मेहनत करके ज्योति और दीपक ने उसे पढ़ाया और इस काबिल बनाया कि वह अपने जीवन में कुछ अच्छा कर सके। अब सूरज की नौकरी लग चुकी थी और उसका विवाह भी उसकी इच्छा अनुसार कर दिया गया था। लेकिन दुर्भाग्यवश सूरज की पत्नी झगड़ालू प्रवृत्ति की थी। वह आए दिन सूरज की अनुपस्थिति में मां-बाप से लड़ती और उन्हें खाने तक नहीं देती थी। यह सब सुनकर सूरज पत्नी को अपने साथ ले गया और घर पर रह गए दीपक और ज्योति, जो अब बूढ़े हो चुके थे।

एक दिन अचानक ज्योति की तबीयत काफी खराब हो गई। उसकी हालत यह थी कि डॉक्टरों ने यह सलाह दी कि इनका बचना मुश्किल है, अब आप इन्हें घर ले जाएं। दीपक ज्योति को घर ले आया और उसकी हर छोटी या बड़ी बात का खयाल रखा। जो वह कहती वह पहले ही लाकर रख देता। अंततः बीमारी की वजह से ज्योति इस देह को त्याग कर चल बसी। यह खबर सुनकर उनका बेटा और बहू जल्दी घर आए। ज्योति के अंतिम संस्कार के लिए जा ही रहे थे कि अचानक दीपक

को दिल का दौरा पड़ा। जब तक अस्पताल पहुंचते, सांसें थम गई थीं और डॉक्टरों ने मरणासन्न घोषित कर दिया। इस तरह उन्होंने अनेक तकलीफों के बावजूद अपने सफर में एक-दूसरे का हमसफर बनकर जीवन भर साथ निभाया। उनकी मंज़िल, जो एक साथ शुरू हुई थी, वह एक ही साथ समाप्त हो गई और वह साथ-साथ एक नए सफर पर हमसफर बनकर इस दुनिया से अलविदा हो गए।



आर्यन सिंह भदौरिया  
लेखापरीक्षक  
प्र.म.ले.(ले.प.-I)



बचपन-सा यह मासूम मन  
खोजता ज्ञान समझ कर धन  
पास तो की मैंने परीक्षा  
पर पूरी न हुई अपनी इच्छा  
दादा जी ने कहा- नहीं रे बाबू  
विद्या पर तू पाया न काबू  
बढ़ते जाओ ज्ञान की ओर  
दूर नहीं, बस कुछ दूर और.....

अब हुआ न पूर्ण ज्ञानी  
कैसे बनता मैं धन अभिमानी  
बढ़ता गया सहमा-सहमा  
आती जिधर से ज्ञान की किरणें  
दिन-प्रतिदिन किताब पर किताब  
सोचा अब तो पूर्ण हुआ ख्वाब  
पर कहाँ मिला सबकुछ, चलो आगे  
दूर नहीं, बस कुछ दूर और.....

ज्ञान मंदिर की सीढ़ी पर

बढ़ते कदम रुके न क्षण भर  
सोचा एक दिन ऐसा आएगा  
ज्ञान को अपने पास पाऊंगा  
दादा जी अब नहीं रहे दुनिया में  
उनकी बातें भी चली गईं साथ में  
पर देख दादाजी की बातों का असर  
लगता अब भी ज्ञान है कुछ दूर  
दूर नहीं, बस कुछ दूर और.....

दादाजी ने तो किया कमाल है  
समझा के मुझको किया विशाल है  
ज्ञान तो सबने पाया है  
पर, किसी ने अंत न पाया है  
दुख: से दिलाए मन को मुक्ति  
ज्ञान में है इतनी शक्ति  
अब आगे जीवन में अंतिम दौर  
तब भी लगे ज्ञान है कुछ दूर और  
दूर नहीं, बस कुछ दूर और.....



प्रभात हंसदा  
लेखापरीक्षक  
प्र.म.ले.(ले.प.-I)



*“सपनों में भागती / एक स्त्री का पीछा करते /  
कभी देखा है / तुमने उसे रिश्तों के कुरुक्षेत्र में / अपने...  
आपसे लड़ते। तन के भूगोल से परे / एक स्त्री के मन की  
गांठें खोलकर / कभी पढ़ा है तुमने / उसके भीतर का  
खौलता इतिहास?” – निर्मला पुतुल*

स्त्री और गुलामी का संबंध अत्यंत पुराना है। जैसे-जैसे समाज का विकास होता गया वैसे-वैसे स्त्री पर अत्याचार बढ़ता गया। “देवी”, “परी” जैसी संज्ञाओं से

एक औरत को अभिसंबोधित करने से पूर्व क्या हमने कभी सोचा है कि इसका परिणाम क्या हो सकता है? सदियों से पितृसत्ता की जंजीरों में कैद इस वर्ग को पूर्णतया आज भी अपने तरीके से जीवन जीने का अधिकार संवैधानिक स्तर पर प्राप्त होने के बावजूद भी सामाजिक स्तर पर नहीं हुआ है। जिस देश में स्वतंत्रता, समता और बंधुता न हो उस देश का विकास भले ही भौतिक स्तर पर हो सकता है पर वैचारिक स्तर पर नहीं। अक्सर कहा जाता है कि समाज में व्याप्त तत्वों का

चित्रण साहित्य में होता है। किंतु यह चित्रण केवल साहित्य तक सीमित नहीं है, बल्कि तकनीकी तौर पर अति विकसित इस दुनिया में ऐसे कई माध्यम हैं जो पल भर में करोड़ों लोगों तक अपना संदेश पहुंचाते हैं। सोशल नेटवर्किंग की इस दुनिया में सिनेमा का महत्व प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। दो-ढाई घंटे तक बंद कमरे में अंधेरे में बैठकर एक अलग ही दुनिया में ले जाने की शक्ति केवल सिनेमा को ही प्राप्त है। अपनी सारी खुशी और गम को भुलाकर इंसान उसमें मग्न हो जाता है और अभिनेताओं के सुख-दुःख में शामिल हो जाता है। हर एक वस्तु में गुण-दोष का होना स्वाभाविक है और वह उपयोग करने वाले पर निर्भर करता है। दुनिया में व्याप्त महामारी के कारण आज सिनेमा ऑनलाइन माध्यमों पर रिलीज़ की जा रही है। एक समय ऐसा भी था जब लोग अपने परिवार के साथ जाकर एक बड़े हॉल में बैठकर सिनेमा देखा करते थे। वह समय फिर से आने की आशा करते हुए मुख्य विषय की ओर चलते हैं।

समाज को प्रभावित करने में सिनेमा की भूमिका अद्वितीय है। यहाँ कुछ सालों से समाज पर सिनेमा के प्रभाव को लेकर काफी विवाद खड़े हुए हैं, मगर इस बात को हम नकार नहीं सकते कि सिनेमा पूर्णतया समाज से अलग है। चूंकि समाज में घटित घटनाओं का चित्रण कई सारी सिनेमाओं में हम देख चुके हैं और उसका प्रभाव समाज पर किस प्रकार होता है इस बात के भी गवाह हम रह चुके हैं। अगर थोड़ी सी खुली दृष्टि से उस पर विचार करेंगे तो इस बात को समझने में देर न लगेगी कि ज्यादातर फिल्मों में नायिका/स्त्री को एक वस्तु के रूप में ही चित्रित किया जाता है। ऐसी एक वस्तु जिसका केवल नायक के मनोरंजन के लिए उपयोग कर कई जगहों पर फिट किया जाता है। नायक को हमेशा सर्वगुण संपन्न के रूप में दिखाया जाता है। मलयालम सिनेमा आज वैश्विक

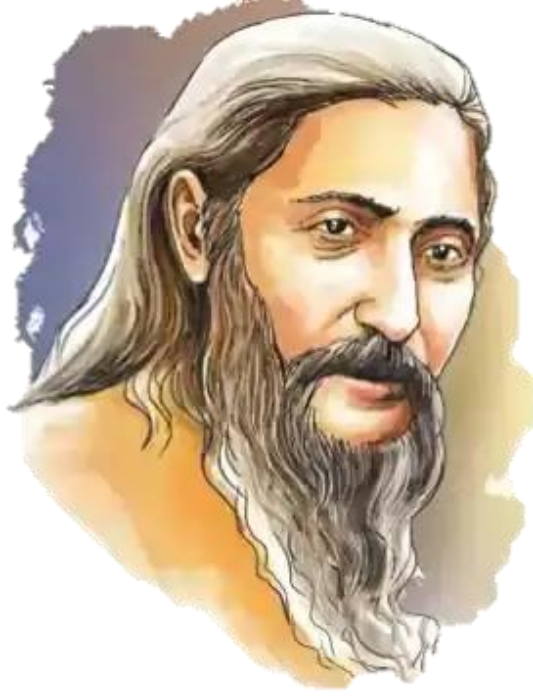
स्तर पर चर्चित है। केवल भारतीय भाषाओं में ही नहीं बल्कि विश्व के अन्य देशों की भाषाओं में भी मलयालम सिनेमा की रीमेक की जाती है, या फिर उप शीर्षकों के साथ देखी जाती है। मलयालम सिनेमा की विशिष्टता को समझने के लिए इससे अधिक क्या चाहिए? जैसे कि पहले कहा जा चुका है, हर एक तत्व का गुण और दोष होता है उसी प्रकार कुछ फिल्मों में ऐसी भी हैं जिनमें स्त्री को केवल वस्तु के रूप में चित्रित करने के साथ-साथ उसका अपमान भी किया गया है और कुछ सिनेमाएं ऐसी भी हैं जिनमें सही मायने में उनकी समस्याओं को समाज के समक्ष रखने का प्रयास किया गया है। समय और परिवर्तन का बहुत गहरा संबंध है। समय के साथ सामाजिक परिवर्तन का होना स्वाभाविक है चाहे वह प्रगति सकारात्मक हो या फिर नकारात्मक। सोशल मीडिया की इस दुनिया में मलयालम फिल्मों में भी काफी परिवर्तन हुआ। सिनेमा जगत में कुछ सालों से स्त्री केंद्रित सिनेमाएं आने लगीं जिसे निस्संदेह बहुत बड़ा परिवर्तन कह सकते हैं। क्योंकि जिस दुनिया में सिर्फ पुरुषों का राज चलता था वहां अब स्त्रियाँ अपनी समस्याओं को लेकर सामने आईं और सिनेमा बनाने लगीं। मलयालम सिनेमा जगत की निर्देशिकाओं की फिल्मों की पहुँच पर अगर आप नज़र डालेंगे तो यह बात स्पष्ट हो जाएगी। स्त्री की समस्या केवल स्त्री तक सीमित नहीं है, वह एक पूरे समाज की समस्या है और इस कटु यथार्थ को समझते हुए मलयालम में कई ऐसे निर्देशक आए जो स्त्री की समस्या को स्त्री से भी बेहतर ढंग से समझकर प्रस्तुत करने लगे। 2021 में रिलीज़ हुई जियो बेबी द्वारा निर्देशित 'दि ग्रेट इंडियन किचन' इसका उत्तम उदाहरण है। इसकी खूब चर्चा हुई। कारण ढूँढने के लिए कहीं और जाने की ज़रूरत नहीं है। बस एक बार सिनेमा देख लीजिए सब समझ में आ जाएगा। एक पति, पत्नी और पति के पिता के बीच से होती हुई यह

सिनेमा भारत के तथाकथित 'रसोई' की गंदगी (जिसका भार केवल स्त्रियों के सिर पर होता है) की ओर जाती है। पितृसत्तात्मक समाज के विभीषण सच की इससे बेहतर ढंग से प्रस्तुति किसी और सिनेमा में आप नहीं देख सकते। अक्सर लड़कियों को यह सिखाया जाता है कि शादी के बाद उस घर की पूरी ज़िम्मेदारी तुम्हारे कंधों पर होगी, उस घर का सारा काम तुम्हारा होगा, पति के साथ-साथ उस घर के हर एक सदस्य की ज़िम्मेदारी तुम्हारी होगी, यहाँ तक कि उस घर की गंदगी की ज़िम्मेदारी भी तुम पर होगी। इन सारी बातों का चित्रण जिस प्रकार इस सिनेमा में किया गया है उसे शब्दों में लिख पाना असंभव है। पति और ससुर के बाद जब पत्नी और सास खाना खाने बैठती हैं तो टेबल पर चबाकर छोड़ी गई सब्जी मिलती है, पूरा टेबल गंदा होता है। रसोई के वाश बेसिन से जब गंदा पानी टपकने लगता है तो वह अपने पति से कहती है कि साफ़ करा दो। लेकिन वह बात कभी मानी नहीं जाती है। अपने घर में गंदगी फैलाने वाला पति जब बाहर खाना खाने जाता है तो साफ़-सफाई का सबसे अधिक ध्यान रखता हुआ नज़र आता है। पति के लिए वह सिर्फ़ मशीन है जो घर का सारा काम करे। लेकिन जिस दिन वह समझ जाती है कि जिस घर में उसके लिए कोई स्थान नहीं है वहाँ न रहना ही बेहतर है, उस दिन वह उस घर से निकल जाती है और अपने सपनों का पीछा करने लगती है। जब वह मायके चली जाती है

तो छोटे भाई को अपना काम छोटी बहन से करवाते हुए पाती है तो डांटकर कहती है कि तुम (मर्द) अपना काम खुद क्यों नहीं कर सकते हो? पुराने समय से यही परंपरा चली आ रही है कि घर के आदमी को खाना पकाकर परोसना, पानी पिलाना, कपड़े धोकर सुखा देना - ये सब औरत की ज़िम्मेदारी हैं। इस प्रकार जीवन के कई अनदेखे-अनछुए इलाकों पर यह सिनेमा प्रकाश डालती है। पितृसत्तात्मक समाज में व्याप्त पत्नी की संकल्पना के खिलाफ़ इस सिनेमा ने सबसे ज्यादा आवाज़ बुलंद की है। एक और सिनेमा का नाम देखिए - 'केट्योलाणु एंटे मालाखा' यानी 'मेरी पत्नी परी है'। जब किसी व्यक्ति को या फिर स्त्री को देवी, परी आदि बनाते हैं तो उनका दर्जा इंसानों से ऊपर उठ जाता है। उसके बाद जब उनसे कोई गलती हो जाती है तो उसे कुछ और ही बना दिया जाता है। सबसे पहले समझने की बात यह है कि कोई भी सर्वगुण संपन्न नहीं होता है (Nobody is Perfect)। इंसान है तो वह निस्संदेह गलती करेगा चाहे वह स्त्री हो या पुरुष। जब किसी को ये संज्ञा दी जाती है तो उसके आगे का जीवन उस नाम को बनाए रखने की कोशिश में और खराब हो जाता है। इसलिए स्त्री चाहे पत्नी हो या माँ - बस उसे इंसान बनकर रहने दीजिए। आइए, पुरुष से आगे नहीं बल्कि उसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने के लिए एक सुंदर समाज का निर्माण करें।



वंदना एस  
कनिष्ठ अनुवादक  
प्र.नि.ले.प.(कै.)



जन्म लिया मेदनीपुर बंगाल में,  
मेरे प्रिय कविवर निराला ने।  
जनता के हैं ये कवि,  
महाप्राण निराला की शानदार छवि।

छायावाद के महेश कहलाए,  
ओज व औदात्य के कवि बन आए।  
इनकी कविताओं में है वो बात,  
जैसे दीवानों की हस्ती का साथ।

भिक्षुक की कविता में गुनगुनाता,  
इनका अंदाज़ मुझे बहुत है भाता।  
कुकुरमुत्ता इनकी ऐसी कविता,  
जिसने हर मध्यवर्गीय का दिल जीता।

रबबर इनका प्रिय छंद,  
मन में रहता था इनके द्वंद।  
लंबी कविता राम की शक्ति पूजा,

इनके जैसा कोई न दूजा।

अनामिका कविता का क्या कहना,  
वह है हर कवि की प्रेरणा।  
जूही की कली इनकी प्रथम रचना,  
छायावाद की यह संरचना।

सरोज-स्मृति इनका शोक गीत,  
था न इनका कोई मीत।  
कर दिया सब कुछ कुर्बान,  
निराला जी हैं बहुत महान ।



संजय कुमार  
स.ले.प.अ.  
प्र.नि.ले.प.(कें.)



**हिंदी! हिंदी! हिंदी!** हमारे देश के सभी केंद्र सरकारी कार्यालयों, सार्वजनिक प्रतिष्ठानों, बैंकों आदि में सितंबर के महीने में चारों ओर हिंदी का बोलबाला रहता है। जगह-जगह बैनर, पोस्टर, सेमिनार, भाषण, विभिन्न प्रतियोगिताएं, भारी-भरकम विचार मंच, कवि सम्मलेन और गोष्ठियां चलती रहती हैं, परंतु इन सबका अंत 14 सितंबर या 28 सितंबर को हो जाता है। मुख्य कार्यक्रम इन्हीं दो तिथियों में संपन्न करके हम अपने कर्तव्यों से मुक्त होकर हिंदी का श्राद्ध कर देते हैं। विडंबना यह है कि हिंदी दिवस हिंदू धर्म के कैलेंडर में हर वर्ष आश्विन मास के पितृपक्ष के 15 दिनों के श्राद्ध दिनों में ही आता है। जिस प्रकार हम अपने पूर्वजों को वर्ष में एक बार स्मरण करके श्राद्ध / भोजन करते एवं कराते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करके भूल जाते हैं उसी प्रकार वर्ष में एक बार हिंदी पखवाड़ा / हिंदी दिवस मनाकर उपरोक्त रस्मों को पूरा करते हुए अपनी भाषा

को श्रद्धांजलि दे देते हैं। कितनी शर्म की बात है कि हिंदुस्तान में हिंदी की यह दुर्दशा, छिः छिः छिः। माता हिंदी की आत्मा अपनी श्रेष्ठ एवं शिक्षित संतानों द्वारा किए गए इस प्रकार के उपेक्षित व्यवहार से कितनी आहत होती होगी, इसकी कल्पना हम लोगों ने शायद नहीं की है।

बात हिंदी की हो रही है, किसी भी मामले में हिंदी को उपेक्षित नहीं होना चाहिए। हिंदी हमारी मातृभाषा है, अर्थात् मानव-शिशु अपनी माता का दुग्धपान करते हुए जब भी पहला शब्द बोलता है तो उसके मुँह से माँ, मम्मा, मामा शब्द ही निकलता है, जो कि हिंदी में माता से संबंधित पर्यायवाची कहे गए हैं। परंतु अफसोस की बात यह है कि जब यही बच्चे 3-4 वर्ष के हो जाते हैं तो वही पढ़ी-लिखी माताएं बच्चे को शरीर के अंग - आँख, नाक, कान, मुँह न बताकर अंग्रेज़ी रूपांतरण में तोते जैसी रट लगवाकर आई, इयर, नोज़,

माउथ से परिचित करवाती हैं। रिश्तों में भी सभी को अंकल, आंटी, कज़िन जैसे संबोधनों से बालक हमेशा कन्फ्यूज रहता है कि मौसी, चाची, मामी, बुआ में कौन-सी आंटी हैं और चाचा, मौसा, फूफा, ताऊ, मामा कौन-से अंकल हैं। इसके अलावा जब भी शिक्षित माताएं अपनी सहेलियों अथवा किसी पार्टी, समारोह में अन्य महिलाओं से मिलती हैं तो उनके माथे पर बल पड़े रहते हैं, भौंहे चढ़ी रहती हैं, 3-4 वर्ष का बच्चा चाहे उनकी गोद में हो, बगल में या आसपास खेल रहा हो तो उसी के बारे में बातें करती हैं कि क्या करूं, कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि इस कंपटीशन के ज़माने में बच्चे का किस स्कूल में नाम लिखाया जाए। उनमें से कोई बोलती है कि अरे, मैं तो मम्मी-पापा को समझा-समझाकर थक गई कि वे कम से कम बच्चों से अंग्रेजी में बातें किया करें। वे मानते ही नहीं, खुद तो हिंदी बोलते हैं, बच्चे को भी हिंदी सिखा कर गंवार बना रहे हैं। अरे, इस प्रकार बच्चे कैसे एंट्रेंस एग्ज़ाम में पास होंगे? इसी कड़ी में जब बच्चा स्कूल जाने लायक हो जाता है तब नामी-गिरामी स्कूलों का चयन अंग्रेजीदां स्कूलों की भारी भरकम फ़ीस से माँ-बाप की चिंताएं उन्हें असमय ही बुढ़ापे की ओर ले जाती हैं। आभिजात्य वर्गीय हाई-फाई किंडर-गार्डन स्कूलों में माता-पिता तथा बच्चे के इंटरव्यू की लंबी प्रक्रिया के बाद एडमिशन लिस्ट में जब बच्चे का नाम दिखता है तो उन्हें आत्म-संतुष्टि से ऐसा प्रतीत होता है कि उनके बच्चे ने एवरेस्ट फतह कर लिया है। बच्चा के.जी. से शुरू करते हुए और ट्विंकिल ट्विंकिल लिटिल स्टार रटते हुए प्राइमरी और अपर प्राइमरी तक पहुँचने के बाद उसमें श्रेष्ठता का बोध पनपने लगता है। वह अपने से निम्न स्तर के स्कूलों में पढ़ने वाले पड़ोसी बच्चों से मिल-जुल नहीं पाता है और उनको हीनभावना से देखते हुए अपमानित करने का यदा-कदा मौका ढूँढता रहता है। कमाल की बात यह है कि जिस उम्र में बच्चा कई

भाषाएं सीख सकता है उसी उम्र के बच्चे पर सिर्फ एक भाषा सीखने और हिंदी न सीखने का दवाब बनाते कई अभिभावक और अध्यापक देखे जा सकते हैं। उनकी सबसे बड़ी चिंता यह है कि उन्होंने ज्ञान का पर्याय केवल भाषा को बना लिया है। कई स्कूल तो ऐसे भी हैं जहाँ हिंदी पढ़ना अनिवार्य नहीं है। असल में यह समस्या हिंदी की नहीं है, बल्कि हिंदी के 'कूल एंड ट्रेडिंग' स्वभाव की है, अर्थात् जो व्यक्ति हिंदी बोलता है उसे गरीब और पि समझ का माना जाता है। हम जब इंसान की अहमियत, उसका ओहदा, उसकी काबिलियत भाषा से आंकने लगते हैं तो इस तरह की समस्याएं आती हैं। यदि ये समस्याएं न होतीं तो आज भारत में नामी-गिरामी हिंदी मीडियम स्कूल भी होते जो कि मुझे लगता है कि शायद ही कहीं पर इक्का-दुक्का बचे हों।

अंग्रेजी के अलावा अन्य भाषाएं सीखना गलत नहीं है। किसी भी दूसरी भाषा को लिखने, पढ़ने, समझने, बोलने में कोई आपत्ति नहीं है। हमें बार-बार यह चिंतन भी करना चाहिए कि कहीं सिर्फ भाषा का रोड़ा हमें ज्ञान बढ़ाने से रोक तो नहीं रहा है। ऐसी मानसिकता कमोबेश हर प्रदेश के लोगों में है। यहाँ तक कि हिंदी प्रदेशों में हिंदी की दुर्दशा अधिक होती जा रही है। पिछले वर्षों में हिंदी के मूर्धन्य विद्वानों, साहित्यकारों के प्रदेश के जिलों में हाई स्कूल (10वीं) के बच्चे सबसे अधिक हिंदी में फेल हुए हैं, उनका हिंदी व्याकरण, वाक्य-विन्यास और शब्द-संपदा काफी कमज़ोर रहा है। आज हम प्लीज़, थैंक यू, गुड मोर्निंग, गुड नाईट, लंच, डिनर, ब्रेकफास्ट जैसे शब्दों का धड़ल्ले से प्रयोग करते हुए अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते हैं। हिंदी और संस्कृत का अथाह ज्ञान किताबों और ग्रंथों में पड़ा हुआ सड़ रहा है। हमारे पूर्वजों द्वारा संरक्षित पुराणों के जीवनमूल्यों, शिष्टाचार आदि के ज्ञान से भरे हुए ग्रंथों को आजकल कोई व्यक्ति पलट कर देखना नहीं चाहता

है और न ही अपने बच्चों को उनसे कुछ ज्ञान दिलाना चाहता है। ऐसी मानसिकता को बदलने की आवश्यकता है।

भारत सरकार हिंदी के प्रचार-प्रसार में अब तक न जाने हज़ारों करोड़ रुपए खर्च कर चुकी है और हिंदी को राजभाषा का दर्जा 14 सितंबर 1949 अर्थात् 70 वर्ष से अधिक पहले दे चुकी है। केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी के विकास के लिए हज़ारों पद सृजित करके पदाधिकारियों को स्थापित भी कर चुकी है। परंतु अभी तक इसका यथोचित विकास नहीं हो सका है। इसके लिए हिंदी और हिंदी पदाधिकारियों के प्रति मानसिकता बदलनी होगी। कतिपय कार्यालयों में इनके साथ उदासीन व्यवहार, गौरव और सम्मानपूर्वक जीवन जीने हेतु वेतन, पदोन्नति संबंधी विसंगतियों के निराकरण पर ध्यान न देना भी हिंदी के विकास में बाधक बन रहा है। फिर भी संतोष की बात यह है कि आज हिंदी का प्रयोग पहले से अधिक हो रहा है, इसका कारण शायद यह है कि हिंदी भारत की ही नहीं, बल्कि विश्व के बाज़ार की भाषा बन चुकी है। हिंदी फिल्मों और धारावाहिकों के चहेते विश्व के हर कोने में मौजूद हैं। इंटरनेट और गूगल में हिंदी से संबंधित बहुत सारे सर्च इंजन बन गए हैं जिनसे आप एक क्लिक में ही मनचाही सूचनाएं प्राप्त कर सकते हैं। एमज़ोन और अलीबाबा जैसी विदेशी कंपनियां भी हिंदी के ग्राहकों को ध्यान में रखते हुए हिंदी का प्रयोग कर रही हैं।

अभी भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति को संसद से पारित करवाया है जिसमें प्राइमरी तक की शिक्षा बच्चे को अपनी मातृभाषा में देने का प्रावधान है। मैं समझता हूँ कि यह एक स्वागत योग्य कदम है और मेरा एक सुझाव भी है कि दक्षिण के प्रदेशों में हिंदी और उत्तर के प्रदेशों में कोई एक दक्षिण भारतीय भाषा

अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाए, जिससे देश के भावी नागरिकों में भाषाई एकता प्रबल होगी और हिंदी का ज्ञान सबको सहज ही मिलता रहेगा। जैसा कि मैंने पहले कहा है, हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत या कोई भी भाषा हो उसके व्याकरण और शब्द भंडार पर अधिक ध्यान देना चाहिए। उदाहरण के लिए व्याकरण के पर्याप्त ज्ञान के बिना लिंग, वचन, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण संबंधी समस्याओं के कारण अक्सर लोग उस अपरिचित भाषा के प्रयोग से बचना चाहते हैं। अतः इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए प्राइमरी और मिडिल तक कक्षाओं के अध्यापकों को कम से कम इतना ज्ञान अवश्य करवाना चाहिए। इस ज्ञान के कारण लोग बेझिझक हिंदी या अन्य भाषा का प्रयोग करेंगे। आजकल शिक्षा के क्षेत्र में व्याकरण पर बल नहीं दिया जा रहा है, जो कि चिंता का विषय है।

गर्व की बात यह है कि विदेशों में आज लगभग 200 विश्वविद्यालयों और हज़ारों स्कूलों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। चीन, जापान, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड, रूस, इटली, सिंगापुर, इंग्लैंड, फ्रांस और जर्मनी जैसे देशों में लोग बड़े चाव से हिंदी सीखते और पढ़ते हैं। वहां के लोगों को हिंदी सीखने में शर्म महसूस नहीं होती है तो फिर भारतीयों को हिंदी से कैसी शर्म? इसको तो हमें गर्व से सीखना, बोलना, पढ़ना, लिखना चाहिए। हम लोग जब विदेश जाते हैं तो अपना परिचय अंग्रेजी में देते हैं और अभिवादन भी अंग्रेजी में ही करते हैं। परंतु वही विदेशी जब अपनी ही धरती पर हमसे नमस्ते करते हुए टूटी-फूटी हिंदी में अपना परिचय देता है तब हमें अपने आप पर बहुत शर्म आती है, यह मेरा स्वयं का अनुभव है। अतः हमें अपने स्वाभिमान को बरकरार रखते हुए हिंदी बोलने में गर्व महसूस करना चाहिए।

आइए, आज हम यह प्रण लेते हैं कि हिंदी पखवाड़ा और हिंदी दिवस को मात्र औपचारिकता न मानकर हिंदी के विकास में जी जान से लग जाएंगे। सरकारी कार्यालयों में भी हिंदी का प्रयोग मौलिक रूप से टिप्पण, पत्र-लेखन, मसौदे आदि के रूप में गर्व से करें,

तभी हमें हिंदी 'शर्म' की नहीं बल्कि 'गर्व' की भाषा लगेगी।

**जय हिंद, जय हिंदी के उद्घोष के साथ !!**



देव प्रकाश गुप्त  
हिंदी अधिकारी  
प्र.म.ले.(ले.प.-I)



अगस्त 2018 का महीना था। मेरा बगीचा ओणप्पूक्कलम (floral design) के लिए विभिन्न प्रकार के फूलों से लदा हुआ था। हमारी आवासीय कॉलोनी के बच्चे उत्सव की तैयारी में व्यस्त थे। कुल मिलाकर उत्सव का माहौल बना हुआ था और समूची प्रकृति आशा एवं उमंग की धुन में नृत्य कर रही थी।

सुबह से मूसलाधार बारिश हो रही थी जो कि वर्ष के इन दिनों में अक्सर नहीं होती है। इस कारण मेरा

बेटा अपने कार्य स्थल की यात्रा को स्थगित कर दिया और मेरी तीन वर्षीय पोती पोर्टिको में जहाँ पानी भर गया था, वहाँ पर खुशी से नाच रही थी। हम लोग अपना डिनर समाप्त करके बेडरूम में सोने चले गए। सहसा मैं अपने पुत्र के चिल्लाने की आवाज़ से जगी। परेशान होकर मैंने अपने बेडरूम में लगी घड़ी की तरफ देखा, उस समय रात के दो बज रहे थे। मैंने बिस्तर से अपने पैर नीचे रखे तो मेरे पैर घुटनों तक पानी से भर गए थे। मैं भयभीत होकर चिल्लाई, यह जाने बिना कि यह क्या हो

गया है। मेरा बेटा अलमारी से कीमती सामान और कुछ ज़रूरी कागज़ात निकाल रहा था। उसने मुझे कहा कि कुछ कपड़े निकाल लो। मैंने उससे पूछा कि क्यों, तो उसने केवल यही कहा कि चलो! अब मैं डर गई थी कि कुछ तो बहुत बुरा हुआ है और हो सकता है कि अब हम लोग नहीं बचेंगे। मैं पानी से निकलकर चलने लगी थी।

अचानक मुझे ध्यान आया कि मेरी दोनों बकरियाँ (डॉ के अनुसार वे मेरी दुलारी थीं), सोने के लिए जाने से पहले बाहर बंधी थीं। मैं अपने बेटे से ज़ोर से बोली, उसने कहा कि चिंता मत करो। धीरे-धीरे हम घर से बाहर आ गए, चारों तरफ पानी ही पानी दिख रहा था। हमारे सभी पड़ोसी कमर तक पानी में घुसे हुए सड़क पर आ गए थे। बिजली न रहने से हम केवल टॉर्च की धुंधली रोशनी से ही देख पा रहे थे। वे हमें बाहर जाने को बोल रहे थे। मैं एक इंच भी आगे नहीं बढ़ सकी थी। यदि मैं डूब गई तो आगे जाने के लिए कौन मेरी मदद करेगा? हम लोग कहाँ पर हैं??? इस प्रकार के सारे प्रश्न मेरे दिमाग में घूम रहे थे। इसी बीच किसी ने एक रस्सी फेंकी और हम सभी ने बिना जाने-समझे उनका अनुसरण किया। मैंने चारों तरफ यूँ ही देखा, सभी के हाथों में छोटी-छोटी गठरियाँ थीं, हो सकता है कि वे कीमती सामान, कपड़े आदि हों, मुझे नहीं पता। जैसे ही हम आगे बढ़े, जलस्तर बढ़ा हुआ मिला। जो कपड़े मैंने लिए थे, वे अब तक गीले हो गए थे, लेकिन कुछ भी नहीं किया जा सकता था। मेरी आँखों से आंसू टपक रहे थे, क्या मौत मेरे सामने है?

जब हम आगे पहुंचे तो हमें एक मंदिर मिला। हम लोगों को पास वाले बरामदे में ले जाया गया जो अभी भी निर्माणाधीन था। वहाँ पर चारों तरफ बहुत सारे लोग और बच्चे थे जो भयभीत होकर चिल्ला रहे थे। मैं बरामदे के चारों तरफ मोमबत्ती की मद्धम रोशनी में बड़ी मुश्किल से उनके चेहरे देख पा रही थी। मैं बैठ गई,

फर्श अभी बना नहीं था और समतल भी नहीं था। वहाँ पर बाढ़ का पानी बिलकुल नहीं था। मेरे कपड़े गीले और गंदे थे, लेकिन उनको बदलने की कोई गुंजाइश नहीं थी। लोगों की ऊंची आवाज़ की बकबक से वातावरण मुखरित था और विपत्ति का एहसास करा रहा था। मैंने धीरे से अपनी आँखें बंद कीं और जल्दी ही गहरी निद्रा में चली गई। बहू ने मुझे सुबह जगा दिया और किसी ने मुझे पेपर कप में काली चाय पकड़ा दी। मैं प्रसाधन कक्ष में जाना चाहती थी, परंतु कहाँ? मंदिर के पुजारी की पत्नी मुझे अपने कमरे के अंदर ले गई। मैं अचानक असहाय, बेघर औरत बन गई जिसे प्राथमिक ज़रूरतों के लिए भी दूसरों पर निर्भर होना पड़ रहा था। मैंने किसी को कहते सुना कि मेरा बेटा और उसके दोस्त पानी में तैरकर उस पार नज़दीक के बगीचे से कुछ सब्ज़ी और फल लेने गए हैं, यदि मिल गए तो। वे सीमित चीज़ें लेकर लौटे, मैं मुट्ठी भर चावल एवं सांबार दिन भर के गुज़ारे के लिए पा सकी। अब मैं घर से बाहर केवल एक शरणार्थी बन कर रह गई थी।

बारिश से कोई राहत नहीं मिल रही थी, कोई भी फोन काम नहीं कर रहा था। अँधेरा होते ही मच्छरों का समूह उमड़ पड़ा। सभी प्रकार के लोगों को उसी बरामदे में रुकना पड़ा, अमीर और गरीब के बीच कोई भेद-भाव नहीं था। सभी लोग निराश्रित होकर प्रकृति के क्रोध को शांत करने के लिए प्रार्थना में लीन थे। हम औरतों को अपने कीमती सामानों की भी देखभाल करनी थी। एक और परेशानी यह थी कि हमें पुरुषों के बीच रहना पड़ रहा था। वे धीरे-धीरे औरतों, विशेषकर जवान लड़कियों से सटकर बैठने लगे और उन्हीं के सामने अपने कपड़े बदलने लगे। ईश्वर ही जानता है कि उन्होंने शराब का जुगाड़ कहाँ से किया! जल्दी ही, यह बॉलीवुड सिनेमा के दृश्य की तरह आँखों के सामने बारंबार आने लगा, जहाँ हीरो जुल्म ढाने वाले खलनायक को पीटने का इंतज़ार

करता है। मेरा बेटा इन तीन दिनों में बिलकुल नहीं सो सका। यह हम सभी के लिए भयावह स्वप्न जैसा था। उन तीन दिनों में मैं अपना वास्तविक नाम, घर, सुख-सुविधा, भूख और धर्म भूल गई थी। मैं अनिश्चित भविष्य के साथ केवल एक इंसान बन कर रह गई थी, क्योंकि मूसलाधार बारिश लगातार हो रही थी और आपदा संबंधी समाचारों का आना रोज़ की बात हो गई थी। आशा की केवल एक ही किरण थी कि हम लोगों के बीच में कुछ साथी थे। हमने स्वयं अपनी मदद की और

**पाद टिप्पणी:** सरकारी या गैर-सरकारी संगठनों से कोई मदद नहीं मिली। भगवान ही जानता है कि आप लोगों ने जो नकद या अन्य किसी प्रकार का योगदान किया था, उसका क्या हुआ।

एक साथ प्रार्थना की, सच में डर से एक साथ लड़े। जल्दी ही जल स्तर गिरा और हम लोग अपने-अपने घरों में वापस चले गए।

अस्तित्व को चुनौती देने वाले ये तीन दिन हमारे लिए सच में आँख खोलने वाले थे। मानवता का सागर हमें इन कठिनाइयों के दिनों में बचाव में सहायक सिद्ध हुआ। अंततोगत्वा प्रकृति ने योग्यतम को ही बचाव का रास्ता दिखाया है।



बीना थॉमस  
व.ले.प.अ  
प्र.म.ले.(ले.प.-I)



समा गए थे कुछ पल,  
जब देखी वह बादलों की चादर,  
जो ओढ़े थे ये नीले पर्वत।

जैसे बनता है एक सिलसिला,  
मन को झिंझोरता,  
और नैनों को आकर्षित करता।

ऐसे ही दिल को मोहता,  
जैसे लगे यह अंबर गाता एक मीठी धुन,  
सुनकर, यह मन नाचे होकर मस्त।

सोचे, कर लूँ कैद इस मंज़र को,  
भर लूँ झोली और चूम लूँ आसमान,  
उड़ चलूँ अब कोई दूर समुंदर।

जैसे एक पंछी जो हुआ हो आज़ाद,  
बस अभी, उस पिंजरे से,  
जिसमें था वह बंद उमर भर।

छोड़ के पीछे वे बेड़ियाँ,  
अब वह ढूँढे कुछ वैसी ही जंजीरों को,  
करने को कैद उस दिन के अंदाज़ को।

अब उसे कोई कैसे समझाए,  
यह तो है कुदरत के अनोखे मंज़र,  
जो हमेशा ही रहे इस दुनिया की रीतों से आज़ाद ।



आरुषी श्रीवास्तव  
स.ले.प.अ.  
म.ले.(ले.प.-II)



बेरंग-से इस जीवन में,  
जो रंग हज़ार भर जाती है।  
मतलब की इस दुनिया में,  
जो निःस्वार्थ गले लगाती है।

अपरिचितों की इस दुनिया में,  
हमारा सबसे परिचय करवाती है।  
अज्ञानता की अंधेरी दुनिया से,  
निकालने का प्रथम पाठ पढ़ाती है।

जहां न मिलता कुछ भी मुफ्त,  
वहां पर अमृत धार पिलाती है।  
ठोकर मारने वाले इस दुनिया में,  
अंगुली पकड़ कर चलना सिखाती है।

सुबह-सुबह छोड़ने विद्यालय तक जाती है,  
दोपहर को हम उन्हें विद्यालय के बाहर पाते है।  
अच्छा भोजन, अच्छी शिक्षा दीक्षा देकर हमको,  
सुयोग्य सफल संस्कारी और ज्ञानी मानव बनाती है।

जो सारे जहां की खुशियां लुटाकर,  
हम पर अपार स्नेह की नदी बहाती है।  
भगवान के इसी रूप इस जग में,  
महान, पूज्य और ममतामई मां कहलाती है।

!!! जय हिंद !!!



सुशील कुमार पंडित  
लेखापरीक्षक  
म.ले.(ले.प.-II)



हममें से अधिकतर लोगों ने कभी न कभी यह महसूस किया होगा कि काम हम पर भारी पड़ रहा है। आधुनिक जीवन शैली में ऐसी स्थिति से निपटना काफी चुनौतीपूर्ण है। मशहूर मनोवैज्ञानिक लैंबर्ट का मानना है कि जब कोई व्यक्ति लंबे समय तक अपने डेस्क छोड़े बिना काम करता है या परिवार के साथ समय बिताते वक्त ई-मेल की जाँच करता है या सप्ताहांत में भी काम करता है या अपने डेस्क पर ही भोजन करता है तो ऐसे व्यक्ति ज़रूर काम के तनाव से उलझा हुआ है। ऐसे व्यक्तियों में समावेशी विकास लाने और उनके काम की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए उनको इस तनाव से बाहर लाना ज़रूरी है।

*ये पाँच सुझाव हमारे कार्य और जीवन का संतुलन बढ़ाने में सहयोग दे सकते हैं:*

1.  **अपनी प्राथमिकताएं तय करें**

हमें अपने दीर्घकालीन एवं अल्पकालीन लक्ष्य तय कर लेने चाहिए। इन लक्ष्यों के अनुसार हमें अपना समय अलग-अलग हिस्सों में बांटना चाहिए।

अगर आप एक छोटे बच्चे की माँ हैं और शुरुआत में उसके साथ ज़्यादा समय बिताना चाहती हैं तो आप अपने करियर को धीमा कर सकती हैं।

2.  दूसरों की अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए योजना बनाएं

पीक सीज़न में अगर आप छुट्टी लेते हैं तो आपके बॉस इसे बर्दाश्त नहीं करेंगे। इसी तरह आपकी पारिवारिक यात्रा छुट्टी रद्द होने के कारण स्थगित हो जाती है तो परिवार वाले निराश होंगे। इसलिए दोनों तरफ के लोगों को संतुष्ट रखने के लिए उनकी अपेक्षाओं को ध्यान में रखकर योजना बनाना ज़रूरी है।

3.  अपनी सेहत का ख्याल रखें

जीवन में कुछ हासिल करने के लिए हमारे स्वास्थ्य का ख्याल रखना बहुत ज़रूरी है। अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए समय पर भोजन करना चाहिए, नियमित व्यायाम करना चाहिए और अच्छी नींद भी लेनी चाहिए। जब कड़ी मेहनत के बाद कुछ हासिल करते हैं तो खुद को इनाम भी देना चाहिए।

मैं आशा करती हूँ कि मेरे सहयोगी इस लेख को पढ़कर, इन सुझावों का पालन करें और इसका लाभ प्राप्त करें।

सोने से एक घंटा पहले इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों को बंद कर देना चाहिए।

4.  'न' कहना सीखें

'न' कहना गुनाह नहीं है। वास्तव में, अगर हम कोई कार्य करने को राज़ी होते हैं और उसे पूरा नहीं कर पाते तो वह अधिक निराशाजनक होगा। इसलिए अपनी बात खुलकर व्यक्त करनी होगी। 'न' भी नरम और आश्वस्त तरीके से कहा जा सकता है।

5.  कुछ समय अपने लिए भी रखें

प्रत्येक व्यक्ति को कुछ व्यक्तिगत समय की आवश्यकता होती है जिससे कि वह अपने शौक को विकसित कर सके। इससे व्यक्ति की कार्यकुशलता में वृद्धि होती है। मैं विशेष रूप से महिलाओं से यह कहना चाहती हूँ कि निजी समय लेना कोई पाप नहीं है। इसको अपनाने से आप बेहतर योगदान दे पाएंगी।



के. सुभाषिणी  
व.ले.प.अ.  
प्र.नि.ले.प.(कें.)



राहुल नाम का एक व्यक्ति था। स्वभाव से वह बहुत ही गंभीर था। उसकी पढ़ाई पूरी हो चुकी थी लेकिन कोई नौकरी नहीं मिली थी। दिन रात वह काम की तलाश में इधर-उधर भटकता रहता था। राहुल एक ईमानदार व्यक्ति था, इसलिए भी उसे काम मिलने में मुश्किलें आ रही थीं। दिन इतने खराब हो चुके थे कि उसे मज़दूरी करनी पड़ी। रोज़ी-रोटी के लिए उसके पास अब कोई विकल्प नहीं था। राहुल पढ़ा-लिखा था और वह उसके व्यवहार में साफ झलकता था।

एक दिन एक सेठ के घर राहुल मज़दूरी कर रहा था। सेठ का ध्यान राहुल के ऊपर ही था। सेठ को समझ आ रहा था कि राहुल एक पढ़ा-लिखा समझदार लड़का है, लेकिन परिस्थितिवश उसे ऐसी मज़दूरी के काम करने पड़ रहे हैं। सेठ को अपने विशेष काम के लिए एक ईमानदार व्यक्ति की ज़रूरत थी। उसने तय किया कि वह राहुल की परीक्षा लेगा।

एक दिन सेठ ने राहुल को अपने पास बुलाया और उसे पचास हजार रुपए दिए जिसमें सौ-सौ के नोट

थे और कहा “भाई तुम ईमानदार लगते हो, ये पैसे मेरे एक व्यापारी को दे आओ”। राहुल ने ईमानदारी से पैसे पहुँचा दिए।

दूसरे दिन, व्यापारी ने राहुल को फिर से पैसे दिए। इस बार उसने राहुल को बिना गिने पैसे दिए और कहा- “खुद ही गिन लो और व्यापारी को दे आओ”। राहुल ने ईमानदारी से काम किया।

सेठ पहले से ही गल्ले में पैसे गिनकर रखता था। पर वह राहुल की ईमानदारी की परीक्षा लेना चाहता था। रोज़ वह सेठ उसे पैसे देने भेजता था।

राहुल की माली हालत तो बहुत ही खराब थी। एक दिन उसकी नीयत डोल गई और उसने सौ रुपए चुरा लिए, जिसका पता सेठ को लग गया था, पर उसने कुछ नहीं कहा। फिर से राहुल को रुपए देने भेजा। सेठ के कुछ न कहने पर राहुल की हिम्मत बढ़ गई। उसने रोज़ाना चोरी करना शुरू कर दिया।

सेठ को उम्मीद थी कि राहुल उसे सच बोलेगा, लेकिन राहुल ने नहीं बोला। एक दिन सेठ ने राहुल को

काम से निकाल दिया। वास्तव में सेठ अपने जीवन का एक सहारा ढूँढ रहा था। उसकी कोई संतान नहीं थी। राहुल को भोला-भाला समझकर उसने उसकी परीक्षा लेनी सोची थी। अगर राहुल सच बोलता तो सेठ उसे अपनी दुकान सौंप देता।

जब राहुल को इस बात का पता चला तो उसे बहुत दुःख हुआ और उसने स्वीकारा कि कैसी भी परिस्थिति हो ईमानदारी ही सर्वोच्च नीति होती है।

कैसा भी मुकाम आए, व्यक्ति को ईमानदारी का साथ नहीं छोड़ना चाहिए। ईमानदारी जीवन की वह कमाई है जो मुश्किल है लेकिन कभी गलत होने नहीं देती।



दीपक कुमार सिंह  
लेखापरीक्षक  
म.ले.(ले.प.-II)



बुद्धत्व की इस पवित्र धरा पर,  
तप और करुणा का मर्म कहाँ है ?  
मरणशील इस संसार में भी अमर,  
करने वाली गांधी का सत्य, अहिंसा और  
निःस्वार्थ मानव सेवा का धर्म कहाँ है ?

महावीर की इस पुण्य नगरी में,  
क्षमा और त्याग का मर्म कहाँ है?  
जनता की सेवा और दुख में साथ,  
स्वयं घर घर जाकर वोट मांगना,  
आज नेताओं का वह धर्म कहाँ है?

सत्ता के लिए किसी हद तक जाने वाले,  
इन नेताओं में परोपकार का मर्म कहाँ है?  
उर्वर धारा सुलभ जल के इस देश में भी,

आज किसान खुशहाल कहां है?  
निःस्वार्थ बीमारों की सेवा वाली,  
मदर तेरेसा के इस देश में भी,  
डॉक्टरों में वह सेवा भाव कहां है ?

!!! जय हिंद !!!



मदन पाल  
एम.टी.एस.  
म.ले.(ले.प.-II)



आज मन में थी बड़ी परेशानी,  
सोचा क्यों न कही जाए बचपन की कहानी।  
जब हमें होती थी हर छोटी- बड़ी चीज़ पर हैरानी,  
मन करता था करने को बड़ी-बड़ी शैतानी।

हालाते बचपन सुनाएं क्या?  
चलो फिर से उस दौर में जाए क्या?  
वह दौर जब परियां अच्छी लगती थीं।  
हर इक कहानी सच्ची लगती थी।  
वह दौर जब सपने बड़े विरल होते थे।  
मन में बड़े हलचल होते थे।  
वह दौर जब सो जाने पर भी दूध पिलाया जाता था।  
मन न होने पर भी हम को नहलाया जाता था।

दोस्ती के कुछ नगमे गाएं क्या?  
अपने दोस्तों के बारे में बताएं क्या?  
वे दोस्त जिनके मिलने से ही सवेरा होता था।  
वे दोस्त जिनके जाते ही मन अंधेरा होता था।  
वे दोस्त जिनके एक बार बुलाने से ही हम उठ आते थे।  
वे दोस्त जिनके चलते हम कितनी ही बार पिट जाते थे।  
वे दोस्त जिनसे मिलकर सारे गम भूल जाते थे।  
वे दोस्त जिनके मिलते ही हम खिल जाते थे।  
वे दोस्त जिनसे मिलकर लगता था कि जीवन अच्छा है,  
वे दोस्त जो आज भी हमारे लिए उतने ही सच्चे हैं।

उससे आगे की बात बताएं क्या?  
उस सुनहरे दौर से बाहर आएँ क्या?  
फिर हम जाकर बड़े हुए, अनेक सवाल खड़े हुए।  
कैरियर बनाना है, नौकरी पानी है, इन सवालों में पड़े रहे।  
न जाने कि किन चीज़ों में जाकर हम अड़े रहे।  
इन चक्करों में बचपन कहीं खो-सा गया।  
मन का एक खूबसूरत कोना सो-सा गया।

काश वह दौर फिर से लौट आए,  
जब हम बेफिक्री से खुशी के नगमे गए।  
अपने हालातों पर मुस्कराएं,  
और ज़िंदगी का लुत्फ़ उठाएं।



मयंक कुमार 'मयंक'  
एम.टी.एस.  
म.ले.(ले.प.-II)



पाप क्या है और पुण्य क्या?  
विधि का क्या विधान है?  
अगर सत्य है कोई एक तो,  
क्यों न सबों का एक-सा संविधान?

क्यों नहीं सब एक जैसे हैं नियमों को मानते?  
हैं एक धर्म के, फिर भी सत्य को अलग-अलग क्यों जानते?  
अगर बुद्ध ने मूर्ति पूजा का किया विरोध,  
तो फिर क्यों उन्हीं के धर्म में उन्हीं को मूर्ति मानते?

क्यों नहीं कोई धर्म रहा अपनी प्राचीन परंपरा पर टिका?  
क्यों जाकर खुद ही अनेक शाखाओं में बंटा?  
किसी धर्म में कोई दिन होता है पवित्र,  
तो कोई उसे मानता शुभ कार्य के लिए निषिद्ध।

यह तो थी मन की व्यथा..  
अब सुनिए असली कथा-  
आस्था और धर्म हैं निज मन की भावना,  
व्यर्थ है इस में उलझ कर किसी की अवमानना।

मानवता और देशप्रेम  
से बढ़कर न कोई धर्म है।  
मातृभूमि और देश के प्रति ही  
हमारा परम कर्तव्य है।



मयंक कुमार 'मयंक'  
एम.टी.एस.  
म.ले.(ले.प.-II)



पुराने ज़माने की बात है। किसी गाँव में राम नाम का एक लड़का रहता था। वह बहुत शैतान था। हर दिन उसकी शिकायतें उसके माता-पिता को सुनने को मिलती। पिता ने राम को विद्यालय भेज दिया, लेकिन उसकी शरारतों से शिक्षक भी दुःखी हो गए। उसपर उसके शिक्षक की बातों का भी कोई असर नहीं होता था। राम कई बार बच्चों की सीट के नीचे चींटियां छोड़ देता, जिससे वे ठीक से पढ़ नहीं पाते। बच्चे उसके डर से उसकी शरारतों के बारे में अपने शिक्षकों से भी शिकायत नहीं करते। एक दिन तंग आकर मास्टरजी ने उसे कक्षा से निकाल दिया। उस ज़माने में जंगल अधिक थे। चारों ओर पेड़-पौधों की भरमार थी। अब राम जंगल में जाकर पेड़-पौधों का ध्यान रखता, पानी से सींचता। घर में उसका मन नहीं लगता था। उसकी चिंता में माँ परेशान रहती।

राम के गाँव में एक बूढ़ी औरत भीख माँगने आती थी। वह उसे बहुत तंग करता। कभी उसका थैला छीनकर उसमें रखी रोटी निकालकर जानवरों को खिला देता तो कभी बूढ़ी औरत पर पानी डाल देता। लेकिन बूढ़ी औरत उसके गाँव में ज़रूर आती। लोग उससे पूछते कि इतना तंग होने के बाद भी वह गाँव में भीख माँगने क्यों आती है? वह सबको एक ही उत्तर देती, "राम बच्चा है, बच्चे शरारत नहीं करेंगे तो क्या हम बड़े लोग करेंगे?" उसकी बात सुनकर सब चुप हो जाते।

इस प्रकार कई महीने बीत गए। एक दिन राम किसी गाँव से आ रहा था। उसे घर पहुँचने की जल्दी थी। किसी किसान ने अपनी फसल की रक्षा के लिए नागफनी की बाड़ लगा रखी थी। रास्ते में नागफनी के काँटे गिरे हुए थे। उसकी नज़र उन काँटों पर पड़ी। उसने सोचा कि वह एक-दो नागफनियों को लेकर रास्ते में डाल देगा तो बड़ा मज़ा आएगा। उसने दो नागफनियों को उठा लिया और उन्हें घास के नीचे छुपा दिया। फिर घर चला आया। दो-तीन दिन बीत गए। आज वह स्वयं उसी रास्ते से जा रहा था। उसी रास्ते से बूढ़ी भिखारिन भी आ रही थी। राम को शरारत सूझी। उसने कहा, "ज़रा थैला दिखाना।" भिखारिन ने उसे थैला दिया। उसमें एक फटी साड़ी थी। दो रोटियां भी थीं। वह थैले को लेकर उछालने लगा कि अब वह थैला नहीं देगा। भिखारिन उसके करीब आती तो वह दौड़कर उससे दूर भाग जाता। इसी भाग-दौड़ में अचानक सूखी नागफनी पर राम का पाँव पड़ गया। उसके पूरे तलवे में काँटे चुभ गए। वह अचानक एक ओर लुढ़क गया। थैला उसके हाथ से छूट गया। भिखारिन राम के पास आई। वहाँ उसने अपनी लाठी से घास हटाई तो उसे एक और नागफनी नज़र आई। उसने उसे भी डंडे से दूर हटा दिया और राम के पास बैठकर पाँव से काँटे निकालने लगी।

भिखारिन ने राम के पाँव से काफी काँटे निकाल दिए। फिर भी कुछ काँटे उसके पाँव में चुभे ही रह गए।

भिखारिन ने उसे सहारा देकर खड़ा किया। राम ने कहा- "मैं घर नहीं जाऊंगा, छाया में बैठकर तलवे के सारे काँटे निकालूंगा, तब घर लौटूंगा"। भिखारिन ने कहा - "यदि तुम मेरी झोंपड़ी तक चलो तो मैं तलवे के सारे काँटे निकाल दूंगी, ऐसा लेप लगा दूंगी कि तुम्हारा पाँव जल्दी ठीक हो जाएगा"। राम तैयार हो गया। भिखारिन उसे अपने कंधे का सहारा देकर झोंपड़ी तक ले आई। फर्श पर एक फटी-पुरानी दरी और कंबल का टुकड़ा बिछा हुआ था। उसी पर उसने राम को लिटाया। पानी गर्म कर उसके पाँव धुले। फिर काँटा निकालकर पैर पर जड़ी-बूटी का लेप लगा दिया। राम को लेप से बहुत राहत मिली और वह सो गया। भिखारिन ने अपने थैले से भीख में मिला आटा निकाला और रोटी बनाई। फिर गाँव जाकर दूध ले आई। उसने राम को रोटी खिलाकर पीने के लिए दूध गर्म करके दिया। राम को अब उस भिखारिन को बूढ़ी कहने में शर्म आई। उसने भिखारिन को दादी कहकर पुकारा। दादी शब्द सुनकर भिखारिन की आँखों से आँसू झरने लगे। राम ने चकित होकर पूछा "तुम रो क्यों रही हो"?

"नहीं बेटा, कोई बात नहीं। मैं तीस वर्षों से यहीं अकेली पड़ी हूँ, तुमने मुझे दादी कहा तो मेरा दिल भर आया", भिखारिन बोली। "नहीं दादी, अब तुम्हें भीख मांगने की ज़रूरत नहीं होगी, मैं तुम्हें खिलाऊँगा", राम बोला। भिखारिन हँस के चुप हो गई। शाम होने जा रही थी। भिखारिन ने उसके पाँव का लेप गर्म पानी से धो दिया। अब उसके पाँव में एक भी काँटा नहीं था। इसके

बाद भिखारिन उसे गाँव तक छोड़ने आई। मोहन दौड़कर घर गया और रोटी तथा सब्जी लेकर आया। उसने कहा- "दादी इसे रात में खाना"। मैं कल सुबह आऊँगा।

भिखारिन घर लौट आई। वह सोच रही थी कि राम कितना अच्छा लड़का है। राम दूसरे दिन उठा और एक किसान से बोला - "यदि आपको मज़दूर की ज़रूरत हो तो मैं काम करने को तैयार हूँ"। किसान को एक मज़दूर की ज़रूरत तो थी, मगर वह राम को एक शरारती बच्चे के रूप में जनता था। वह राम से बोला- "तुम्हें शरारत से फुरसत मिलेगी तभी तो काम करोगे"। "मुझसे आज काम लेकर देखो चाचा, तब पता चलेगा"।

"ठीक है, चलो काम करो"। किसान बोला। राम ने दिनभर मेहनत से काम किया। बदले हुए राम को देखकर किसान बहुत चकित था। उसने राम को चार किलो आटा मज़दूरी में दिया। राम आटा लेकर भिखारिन की झोंपड़ी में जा पहुँचा। भिखारिन खाना बनाने की तैयारी कर रही थी। उसने जब आटा देखा तो कहा- "राम बेटा, यह ले जाकर अपनी माँ को दो। मेरा गुज़ारा तो भगवान चला ही रहा है"।

"नहीं दादी! यह चावल तुम रखो। यह मैंने दिनभर मज़दूरी करके कमाया है। तुम नहीं रखोगी तो मैं कल से मज़दूरी नहीं करूँगा और शरारत करने लगूँगा"। उस दिन से राम बहुत बदल गया। अब वह हर एक की मदद करने की कोशिश करता। गाँव के सबलोग उसकी खूब तारीफ करते।



अनुज गहलौत  
9वीं कक्षा,  
केंद्रीय विद्यालय



हर वर्ष की भांति 2020 का स्वागत भी हमने बड़े उत्साह के साथ किया था। लेकिन शायद कोई चूक हो गई हमसे। साल 2020 इतना नाराज़ हो गया कि अपने साथ लाया एक बिन बुलाया मेहमान - कोविड-19, जिसे हम आम बोलचाल में कोरोना बुलाते हैं। जी हाँ- “कोरोना”। ये वही मेहमान हैं जो आते तो हैं, लेकिन जाने का नाम ही नहीं लेते। इन्हें सिर्फ और सिर्फ अपनी खातिरदारी पसंद है। ये रोज़ सुबह-शाम अखबारों और टी.वी चैनलों के माध्यम से अपनी पब्लिसिटी देखकर खुश हैं और सोच रहे हैं कि थोड़े और दिन सेलिब्रिटी बनकर रहा जाए।

कोरोना की दस्तक भारत में जनवरी में ही हुई और देखते ही देखते मार्च तक इसने अपने पैर पसारने

शुरू कर दिए। उन दिनों हम चाय की टपेरियों पर खड़े-खड़े अपने सहकर्मियों के साथ कोरोना का मज़ाक बनाया करते थे। “अरे, यह तो सिर्फ विदेशों से आए लोगों को हो रहा है, एक बार अप्रैल-मई की गर्मी तो आने दो, वायरस अपने आप खत्म हो जाएगा” - ऐसा कहते हुए हम स्वयं को बहुत बड़ा शोधकर्ता-जीव विज्ञानी समझते थे। यह बात कोरोना को खटक गई। उसने गुस्से में रफ़्तार पकड़ ली और वह ऐतिहासिक क्षण आया जो संभवतः भारत में पहली बार हुआ था - “लॉकडाउन”।

“संपूर्ण लॉकडाउन” - यह शब्द सुनते ही अफ़रा-तफ़री मच गई। परंतु इस बात का संतोष था कि प्रधानमंत्री ने समय रहते यह निर्णय लिया और अब भारत की स्थिति इटली, ब्रिटेन या अमेरिका जैसी नहीं

होगी। 15 दिन होते-होते लगने लगा कि हालात सुधरने लगे हैं। लेकिन अचानक कई जगहों से लॉकडाउन के उल्लंघन की खबरें आने लगीं। कुछ अज्ञानतावश, कुछ मजबूरीवश और कुछ लोग जान-बूझकर ऐसा कर रहे थे। न्यूज़ चैनल वालों को हर दिन कई ब्रेकिंग न्यूज़ और बहस के मुद्दे दिए जा रहा था यह कोरोना। डर के साथे में हमारी जिंदगी भी कट रही थी। डर कई प्रकार के थे – घर में राशन-सब्ज़ी खत्म हो जाने का डर, बाहर जाओ तो कोरोना का डर और उससे बच भी जाओ तो पुलिस के डंडे का डर। कुछ को अपनी सैलरी के कम होने का तो कुछ को नौकरी जाने का भी डर था। डर का एक विशेष प्रकार भी था – कोरोना की खातिरदारी ने पुरुषों को भी घर के काम-काज पर लगा दिया था। हालाँकि इस लॉकडाउन ने न सिर्फ पुरुषों को, बल्कि कुछ महिलाओं को भी, जिन्होंने जो पहले काम नहीं किया था, सब को पाक-कला में निपुण बना दिया था।

इन सबके अलावा एक और समस्या आई इस दौरान। लॉकडाउन के कारण जहाँ एक ओर घर का काम बढ़ गया था (क्योंकि काम वाली छुट्टी पर थी), वहीं दूसरी ओर ऑफिस का काम भी घर आ गया था। एक हाथ में मोबाइल, दूसरे में रसोई की करछी। बीच-बीच में लैपटॉप भी लिविंग रूम से किचन की सैर करता रहता था। बच्चे अब तक घर बैठे-बैठे ऊब चुके थे और उनकी

शैतानियाँ पराकाष्ठा पार कर चुकी थीं। ऊपर से स्कूल वालों ने रोज़ नई-नई गतिविधियों की लिस्ट बना रखी थी ऑनलाइन क्लास के नाम पर। घर का माहौल किसी आई.टी. कंपनी जैसा हो गया था। सब अपने-अपने लैपटॉप और मोबाइल में व्यस्त और कई बार इंटरनेट के धोखा दे देने से सर पकड़के बैठे पाए जा रहे थे। क्या कहूँ, स्थिति इतनी जटिल हो गई थी कि मन कहता था – “कोरोना से अब उतना डर नहीं लगता साहब, वर्क फ्रॉम होम से लगता है”।

समय के साथ कोरोना बढ़ता जा रहा था और हमें उसके साथ जीने की आदत लगती जा रही थी। ये मेहमान तो जम के ही बैठ गए, अब कितनी खातिर करें इनकी। अब तो लॉकडाउन भी अनलॉक में परिवर्तित हो चुका है। अब डर फिर से सता रहा है। ऑफिस आना ज़रूरी है, मजबूरी है। लेकिन डर लगता है कि कहीं ये बिनबुलाया मेहमान साथ न लग जाए। खुद के लिए कभी डर नहीं लगता, पर बच्चों की चिंता होती है। पर कब तक डरें? कभी न कभी तो इससे निकलना ही पड़ेगा या शायद अब ऐसे ही रहने की आदत डालनी पड़ेगी। तो चलो, डर को थोड़ा भगाते हैं और हँस के इस मेहमान की सेवा करते हैं। आखिर मेहमान तो मेहमान होता है, आज नहीं तो कल चला ही जाएगा।



आरती प्रियदर्शिनी  
वरिष्ठ लेखापरीक्षक  
(प्र.नि.ले.प.कै.)

देश में अब रोज़गार नहीं



डिग्रियां टंगी दीवार सहारे, मेरिट का एतबार नहीं,  
सजी है नौकरियों की डोली, देश में अब रोज़गार नहीं,  
देश में अब रोज़गार नहीं।

नौकरी के नाम पर रोज़ ठगाई, सरकार का इंतज़ार करवाया,  
देश में अब रोज़गार नहीं।

श्मशान हुए बाज़ार यहाँ सब, चौपट कारोबार यहाँ सब,  
डॉलर पहुंचा आसमान पर, रुपया हुआ लाचार यहाँ सब,  
देश में अब रोज़गार नहीं।

चाय से चीनी रूठी, पत्नी से पति रूठा,  
दाल से रोटी छूटी, पैसे के लिए घर छूटा,  
साहब खाए मशरूम की भुजिया और,  
दिनभर अकडन दिखाए अपनी मर्ज़िया,  
देश में अब रोज़गार नहीं।

कमर किसान की टूट गई, खड़ी फ़सल कोई खरीददार नहीं,  
मौसम का कोई एतबार नहीं, व्यापारी से कोई सवाल नहीं,  
देश में अब रोज़गार नहीं।

दाम सिलिंडर के दूने हो गए, कल के दिन नमूने हो गए,  
मेकअप अब ब्रेकअप हो गया, चाँद से मुखड़े पड़ गए रूखे,  
नारी है, पर श्रृंगार नहीं, घर है पर कोई किराएदार नहीं,  
देश में अब रोज़गार नहीं।

साधु-संतों का व्यापार बढ़ा, इम्युनिटी वस्तुओं का इस्तेमाल बढ़ा,  
डिग्रीधारी व्यापारी अब हो गए घंटाधारी व्यापारी,  
देश में अब रोज़गार नहीं।

पर्यटक स्थल भी सूने हो गए, पुजारी भी नमूने हो गए,  
भिखारी भी बेसहारे हो गए, सड़कें भी आवारी हो गईं,  
देश में अब रोज़गार नहीं।

किसे ज़िम्मेदार ठहराया जाए, किसे सज़ा दिलाई जाए,  
किसे सम्मानित किया जाए, किसे पुरस्कृत किया जाए,  
देश में अब रोज़गार नहीं।



स्वामी दयानंद कुमार  
व.ले.प.  
प्र.नि.ले.प.(कें.)



अगर बच्चा आलोचना के माहौल में रहता है तो  
निंदा करना सीखता है।

अगर बच्चा प्रशंसा के माहौल में रहता है तो  
तारीफ करना सीखता है।

अगर बच्चा लड़ने के माहौल में रहता है तो  
झगडा करना सीखता है।

अगर बच्चा सहनशीलता के माहौल में रहता है तो  
धैर्य सीखता है।

अगर बच्चा बेहूदी से खिल्ली उड़ाने वाले माहौल में  
रहता है तो  
संकोच करना सीखता है।

अगर बच्चा प्रोत्साहन वाले माहौल में रहता है तो  
आत्मविश्वास सीखता है।

अगर बच्चा शर्मिंदगी के माहौल में रहता है तो  
स्वयं को दोषी मानता है।

अगर बच्चा समर्थन करने वाले माहौल में रहता है तो  
इंसाफ करना सीखता है।

अगर बच्चा न्याय संगत माहौल में रहता है तो  
इंसाफ की संगति में रहना सीखता है।

अगर बच्चा सहमति व दोस्ती के माहौल में रहता है तो  
वह दुनिया में नेक दिल व स्वस्थ विचारों वाला इंसान  
होता है।



सुनील कुमार  
स.ले.प.अ.  
म.ले.(ले.प.-II)



सफलता की पहली कुंजी श्रम है, इसके बिना सफलता का स्वाद कभी भी नहीं चखा जा सकता। ज़िंदगी में आगे बढ़ना है, सुख-सुविधा से रहना है, एक मुकाम हासिल करना है तो इंसान को श्रम करना ही है। भगवान ने श्रम करने का गुण मनुष्यों के साथ-साथ सभी जीव-जंतुओं को भी दिया है। पक्षियों को भी सुबह उठकर अपने खाने-पीने का इंतज़ाम करने के लिए बाहर जाना पड़ता है, उसे बड़े होते ही उड़ना सिखाया जाता है, ताकि वह अपना पालन-पोषण खुद कर सके। दुनिया में हर जीव-जंतु को अपने पेट भरने के लिए खुद मेहनत करती पड़ती है। इसी तरह मनुष्यों को भी बचपन से बड़े होते ही श्रम करना सिखाया जाता है। चाहे वह पढ़ाई के लिए हो या पैसे कमाने के लिए या नाम कमाने के लिए। मेहनत के बिना तो रद्दी भी हाथ नहीं आती।

देश-दुनिया के प्रसिद्ध लोगों ने अपनी मेहनत-परिश्रम के बल से ही दुनिया को ये अद्भुत चीजें दीं हैं। हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को ही देखिए, ये

हफ्ते में सातों दिन 17-18 घंटे काम करते हैं, ये कभी त्योहारों और पर्सनल कामों के लिए छुट्टी नहीं लेते हैं। देश का इतना बड़ा आदमी जिसे छुट्टी के लिए किसी को जवाब न देना पड़े, वह भी परिश्रम करने से पीछे नहीं हटता है। देश को आज़ादी दिलाने के लिए महात्मा गाँधी ने जी-जान से रात-दिन एक करके मेहनत की और आज इसका फल है कि हम आज़ाद हैं। कड़ी मेहनत एक कीमत है जो हम सफलता पाने के लिए भुगतान करते हैं और जिससे जीवन में खुशियाँ ही खुशियाँ आती हैं।

शारीरिक व मानसिक रूप से किया गया काम परिश्रम कहलाता है। ये काम हम अपनी इच्छा के अनुसार चुनते हैं, जिसे लेकर हम अपने उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं। पहले श्रम का मतलब सिर्फ शारीरिक श्रम होता था जो मज़दूर या लेबर वर्ग करता था। लेकिन अब ऐसा नहीं है, डॉक्टर, इंजिनीयर, वकील, राजनीतिज्ञ, अभिनेता-अभिनेत्री, टीचर,

सरकारी व प्राइवेट दफ्तरों में काम करने वाला हर व्यक्ति श्रम करता है।

कामयाब व्यक्ति के जीवन से हम परिश्रम के बारे में अधिक जान सकते हैं, उनके जीवन से हमें इसकी सही परिभाषा समझ में आती है। तो चलिए हम आज आपको कुछ बातें बताते हैं जो मेहनती व्यक्ति अपने जीवन में अपनाता है और सफलता का स्वाद चखता है। इन्हीं आदर्श बातों को हम अपने जीवन में उतार कर सफल हो सकते हैं।

समय की बर्बादी न करें, कई लोग आलस का दामन थामे रहते हैं। वे लोग परिश्रम करने की जगह आराम से धीरे-धीरे काम करके जीवन बिताना चाहते हैं। परिश्रमी व्यक्ति कभी भी समय की बर्बादी में विश्वास नहीं रखता, वह निरंतर काम करते रहने में विश्वास रखता है। समय की बर्बादी आलसी लोगों की निशानी है। कई बार ऐसा भी होता है कि परिश्रम करते रहने से भी मन मुताबिक फल नहीं मिलता है या फल मिलने में देरी होती है। लेकिन इस बात से हार मानकर नहीं बैठना चाहिए। परिश्रम व काम पर विश्वास से सही समय पर सही चीज़ मिल ही जाती है।

धन के पीछे न भागें, परिश्रम का यह मतलब नहीं है कि पैसा कमाने की होड़ में लगे रहें। धन हमारी ज़िंदगी का बहुत बड़ा हिस्सा है, लेकिन धन ही ज़िंदगी नहीं होता है। धन के पीछे परिश्रम करने से दुनिया की सुख-सुविधाएं तो मिलती हैं, लेकिन कई बार मन को शांति नहीं मिलती। परिश्रम का यह मतलब नहीं कि आप ज़िंदगी जीना छोड़ दें और पैसे कमाने में लग जाएं। परिश्रम करते हुए अपने लोगों को साथ लेकर जीवन में आगे बढ़ें। ज़िंदगी जीने का नाम है, यहाँ हर वक्त खुश, मौज-मस्ती करते रहें।

इच्छानुसार ही काम चुनें, कुछ लोग बेमन से काम करते हैं, जिससे वे अपना 100 प्रतिशत उस काम में नहीं दे पाते हैं। ऐसे लोग किसी और की इच्छा के अनुसार ये काम चुन लेते हैं, जिससे उन्हें एक दबाव महसूस होता है और वे लोग काम में परिश्रम करने की जगह बस नाम के लिए ऐसे ही काम करते हैं। हमें अपनी इच्छा के अनुसार ही काम करना चाहिए, तभी उसे पूरे मन व लगन से कर पाएंगे। काम में मन लगेगा तभी हम खुद से परिश्रम करने की भी इच्छा रखेंगे।

असफलता से हार न मानें, सफल व्यक्तियों के जीवन को देखें तो जानेंगे कि उन्हें पहली बार में ही सफलता नहीं मिली थी। निरंतर प्रयास से वे अपने मुकाम तक पहुंचे हैं। उदाहरण के तौर पर, अगर शाहरुख खान फिल्मों में आने से पहले ही यह सोच लेता कि उसे यहाँ काम मिलेगा ही नहीं तो वह आज इतना बड़ा स्टार न बनता। अगर धीरुभाई अंबानी उस छोटी सी कुटिया में बस बैठे रहते, मेहनत न करते तो आज उनका इतना बड़ा कारोबार न होता। अगर अब्राहम लिंकन परिश्रम न करते, स्ट्रीट लाइट में बैठकर पढ़ाई न करते तो वे अमेरिका के राष्ट्रपति कभी न बन पाते। नरेंद्र मोदी जी परिश्रम न करते तो आज चाय की ही दुकान में बैठे होते।

परिश्रम से एक न एक दिन सफलता ज़रूर मिलती है, आज हम अगर विज्ञान के इतने चमत्कार देख पा रहे हैं तो ये मानव जाति के परिश्रम का ही फल हैं। विज्ञान की तरक्की की वजह से आज हम चाँद में अपना कदम रख चुके हैं व मंगल ग्रह पर अपना घर बसाने वाले हैं। देश-विदेश में तरक्की भी वहाँ रहने वाले नागरिकों की वजह से होती है। पूरी दुनिया में विकसित व विकासशील देश हैं। ये सब परिश्रमी व्यक्तियों की वजह से ही यहाँ तक पहुँच पाए हैं। अमेरिका, चीन,

जापान जैसे देशों के साथ आज हमारे भारत का नाम भी लिया जाता है जो जल्द ही विकसित देशों की लिस्ट में आने लगेगा। जापान में हुए परमाणु बम विस्फोट के

बाद कुछ साल पहले आए विशाल भूकंप के बाद उसने अपने आप को फिर खड़ा किया .ये सब परिश्रम की वजह से ही संभव हो पाया है ।



उमेश वर्मा  
लेखापरीक्षक  
प्र.म.ले.(ले.प.-I)



हॉर्न की आवाज़ सुनते ही श्याम और राधा उछलते हुए बाहर की ओर दौड़ी, “दादी आ गई, दादी आ गई!” दादी ने गाड़ी से उतरते ही प्यार से बच्चों को लिपटा लिया। फिर दादी ने रामू काका को आदेश दिया, “झोले में रखे आटे के लड्डू तुरंत किसी डिब्बे में रख दो।” लड्डू का नाम सुनते ही बच्चे मचल गए और तुरंत खाने की ज़िद करने लगे। हँसते हुए दादी ने कहा, “हाथ तो धो लो। तुम जानते हो, खाने का सामान छूने से पहले साबुन से हाथ धोना ज़रूरी होता है, जिससे कोई बीमारी न हो। चलो, तुम लोग भी हाथ धोओ।”

सुबह से ही घर के बाहर सड़क पर चहल-पहल थी। राधा दादी के साथ गेट पर आई तो देखा कि कई मज़दूर सड़क के दोनों तरफ गड्ढे खोद रहे थे। इतने में

पापा और मोहन भी गेट पर आ गए। पापा बोले- “फिर वही हर साल की नौटंकी। फिर नगर निगम पेड़ लगाएगा और फिर ध्यान न रखने के कारण पेड़ मर जाएंगे और फिर अगले साल यह पेड़ लगाने का सिलसिला चलता रहेगा।” दादी ने हैरान होकर पूछा, “सड़क के दोनों तरफ रहने वाले लोग इन पेड़ों का ध्यान क्यों नहीं रखते?” पापा बोले - “ये पेड़ तो सरकार की ज़मीन पर हैं। इनका ध्यान रखने, पानी देने आदि का काम तो नगर निगम का है न।” दादी ने आश्चर्य से उन्हें देखा, फिर धीमे से मुसकुरा दी।

उस दिन शाम से ही दादी ने रामू काका से चिट्ठी भेजकर उस सड़क के 20 मकानों में रहने वालों से मिलने का समय माँगा। दादी ने श्याम और राधा को

भी साथ ले लिया कि वे भी अपने पड़ोसियों और मोहल्ले के लोगों से जान-पहचान कर लेंगे। दादी हर घर में जातीं और अपना परिचय देने के बाद वहाँ रहने वालों से अनुरोध करतीं, “हमारे मोहल्ले में सड़क किनारे ‘पब्लिक’ ज़मीन पर पेड़ लगवाए जा रहे हैं। पब्लिक की ज़मीन यानी हम सबकी ज़मीन है, तो उनका ध्यान हम सबको रखना चाहिए। वैसे भी इनसे जो ऑक्सीजन मिलेगी, उसका लाभ भी तो यहाँ रहने वाले हम सब लोगों को ही मिलेगा। बिना ऑक्सीजन तो हम सब जीवित नहीं रह सकते और पेड़ यह हमें मुफ्त में देते हैं।”

बस फिर क्या था! हर घर के बाहर लगा पौधा उस घर में रहने वालों की ज़िम्मेदारी हो गई। कोई सोनू का पौधा था तो कोई गुड़िया का। सब न केवल अपने-अपने पौधों को पानी देते बल्कि दूसरों के पौधों के पास भी कचरा फेंकने, उसकी शाखा तोड़ने से लोगों को रोकते।

आज दो ही साल में लगाए गए पौधे बड़े हो गए हैं। अनेक पेड़ों में पक्षियों और गिलहरियों ने अपना घर बना लिया है। सड़क पर छाया हो गई है और मोहल्ले वाले एक सूत्र में एक परिवार में बंध गए हैं। सब अपनी ज़िम्मेदारी समझकर अपने मोहल्ले का ध्यान रखते हैं और मिल-जुलकर त्योहार मनाते हैं।



अनुज गहलौत  
कक्षा-नौ  
केंद्रीय विद्यालय, बेंगलूरु



प्रकृति का अनमोल रत्न मिट्टी जल क्षितिज पवन  
आदि काल से अनंत तक इस पर ही निर्भर मानव जीवन  
उपभोक्तावाद, आधुनिकता और विलासिता पसंद मन  
सूखती नदियां तालाब और सिमटते वन-उपवन  
गंदा पानी, अस्वच्छ धारा और जहरीला पवन  
मानव संग समस्त जीव पर मंडराता खतरे का क्षण  
मानवता के इस दौर में हम बन गए अमानव इस क्षण

आओ मिलकर करें प्रण, पर्यावरण का रक्षक बनें हम।

पेड़ लगाकर नन्हे परिंदे के लिए उनका आशियाना बनाएं  
जानलेवा प्लास्टिक को न कहकर धरती को स्वच्छ बनाएं  
तालाब-झील- नदियों को उनकी धारा वापस दिलाएं  
साफ-सफाई और स्वच्छता की संस्कृति अपनाकर  
परिवार , समाज और देश का गौरव से मान बढ़ाएं  
आसान-सी प्रकृति संरक्षण के सन्मार्ग पर चलकर  
भावी पीढ़ियों के जीवन को आसान कर जाएं  
आओ मिलकर पेड़ लगाएं अमूल्य प्रकृति को गले लगाएं।

॥ जय हिंद ॥



सुशील कुमार पंडित  
लेखापरीक्षक  
म.ले.(ले.प.-II)



“महिला सशक्तीकरण” - यह एक ऐसा शब्द है जो सुनते ही हर महिला को लगता है कि उसकी ही बात हो रही है। आजकल यह शब्द बहुत ज्वलंत मुद्दा बन चुका है। कभी-कभी तो यह एक बड़े विवाद को जन्म देता है कि क्या है - महिला सशक्तीकरण? क्या यह सचमुच कुछ है या एक सुंदर सा झूठ? आइए, इसे समझने की चेष्टा करते हैं।

महिला सशक्तीकरण का शुद्ध शाब्दिक अर्थ मूलतः “समाज के हर क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी” से संबंधित है। हाल के वर्षों तक ऐसा देखा जा रहा था कि महिलाओं का जीवन केवल घर-गृहस्थी तक ही सीमित था और उनके पास कई मामलों में निर्णय लेने का अधिकार नहीं था। धीरे-धीरे इस स्थिति में सुधार हुआ और यह कहना गलत नहीं होगा कि काफ़ी संघर्ष के बाद

आज लगभग प्रत्येक क्षेत्र में महिलाएं, पुरुषों के बराबर और कई जगहों पर आगे आ चुकी हैं। अब आप यह सोच रहे होंगे कि इतना सब कुछ तो सही चल रहा है तो फिर आज भी महिला सशक्तीकरण के नाम पर समाज दो खेमों में क्यों बंटा है? अपने व्यक्तिगत जीवन और अपने आस-पास के लोगों के विचारों, विशेषकर सोशल मीडिया इत्यादि से मुझे कुछ विशेष अनुभव हुआ है, जिसे मैं आप सभी के साथ साझा करना चाहती हूँ।

आपमें से कईयों ने लोगों को कहते सुना होगा कि भारत में महिला सशक्तीकरण जैसी कोई चीज़ है ही नहीं। यहाँ आज भी पुरुषों की प्रधानता है। महिला कितनी भी तरक्की क्यों न कर लें, घर की ज़िम्मेदारी उसी की होती है। आज भी उन पर कई बंदिशें हैं। संस्कार के नाम पर आज भी उन्हें गुलामों की तरह रखा जाता है

-इत्यादि। इस विषय पर मेरे विचार भिन्न हैं। किसी भी शक्ति या छूट का आकलन हमेशा अपने समाज के हिसाब से करना चाहिए। हम भारत में रहते हैं। हमारी संस्कृति में विवाह और गृहस्थी का बहुत ही उँचा स्थान है, जो किसी दूसरी सभ्यता में नहीं दिखता। आपने गौर किया होगा कि पश्चिमी देशों में परिवार नाम की संस्था काफ़ी कमज़ोर होती है। तलाक़ आम बात है। बच्चे किशोरावस्था में ही अपने माता-पिता से अलग होकर जीविकोपार्जन करने लगते हैं। ऐसे देशों में घर-गृहस्थी की ज़िम्मेदारी किसी की भी नहीं होती। इन सबके बावजूद अगर वहाँ थोड़ी बहुत भी ज़िम्मेदारी कोई लेता है तो वह माँ होती है। वह अकेले सब कुछ कर पाने में समर्थ होती है। इन महिलाओं को हम सशक्त मानते हैं लेकिन यह देखना भूल जाते हैं कि बच्चे यही संभालती हैं। स्त्रियों में, चाहे वह किसी भी देश की हो, कुछ स्वाभाविक गुण होते हैं, जो बच्चों की ज़रूरतों को समझने में उनकी मदद करते हैं। शायद इसलिए हर संस्कृति में महिला को ही “होम मेकर” माना जाता है। तो अपने घर-परिवार या बच्चे की देखभाल करना कहाँ से महिला का शोषण करना हो गया?

अब बात आती है रहन-सहन, पहनावा आदि की। यह बात यहाँ गौर करने वाली है कि कुछ महिलाएं पाश्चात्य संस्कृति के कपड़े और रहन-सहन अपनाने को अपनी स्वतंत्रता मानती हैं। जब मन करें, कहीं आओ-जाओ। देर रात घर लौटो और कोई कुछ न पूछे तो सब ठीक। अगर किसी ने टोक दिया तो एक ही प्रश्न-क्यों स्त्री ही सलीके से रहे? कोई पुरुषों को क्यों नहीं टोकता? तब इसका एक जवाब है- यह भारत की संस्कृति नहीं है। भारत का इतिहास जिस प्रकार की गौरवशाली स्त्रियों को जानता है, इन्होंने अपने-अपने

कर्तव्यों का निर्वाह बड़े ही मर्यादित तरीके से भारतीय सभ्यता-संस्कृति के दायरे में रहकर किया।

महिला सशक्तीकरण के नाम पर पुरुषों की हर बात में बराबरी करना अनुचित है। इसकी आड़ में आजकल केवल मनमर्ज़ी को प्राथमिकता देने की होड़ शुरू हो गई है। देर रात घर से बाहर घूमना, शराब-सिगरेट पीना, सार्वजनिक जगहों पर धड़ल्ले से अपशब्दों का प्रयोग करना, घर-परिवार को अपने कैरियर या तथाकथित स्वतंत्रता के लिए छोड़ देना, पुरुष यह कर सकता है तो मैं क्यों नहीं? ऐसी मानसिकता रखना, जैसा कि आजकल टी.वी, फिल्मों में दिखाया जाता है- क्या यही है महिला सशक्तीकरण? फ़िल्मी अभिनेत्रियाँ, जो कि महिला सशक्तीकरण के नाम पर अश्लीलता और असामाजिक विचारों को बढ़ावा देती हैं, क्या यही होना चाहिए हमारा आदर्श? ऐसी फिल्में क्या दिखाना चाहती हैं- पता नहीं। पर हाँ, ये महिला सशक्तीकरण के नाम पर भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात अवश्य कर जाती हैं। हमारी आदर्श तो रितु करिधाल और नंदिनी हरिनाथ जैसी गुमनाम महिलाएं होनी चाहिए जो कि मंगलयान टीम का महत्वपूर्ण हिस्सा थीं, न कि महिलाओं की गरिमा को ठेस पहुँचाने वाली कुछ फ़िल्मी अभिनेत्रियाँ।

इन सब बातों के सार रूप में मैं इतना ही कहना चाहती हूँ कि दया, ममता, त्याग और समर्पण जो कि एक महिला की वास्तविक शक्ति है जो स्त्री को स्त्री बनाती है, उनके बिना कैसी महिला और कैसा उनका सशक्तीकरण? अपनी मर्ज़ी से बेरोक-टोक जीना कुछ पल की आज़ादी हो सकती है- शक्ति कतई नहीं। महिला शब्द ही शक्ति का प्रतीक है और स्वयं शक्ति को किसी दिखावटी सशक्तीकरण की कोई आवश्यकता नहीं है।

प्रत्येक महिला अपने अंदर की अच्छाई और समर्पण भाव को स्वेच्छा से, प्रसन्नता से सशक्त करे - यही है असली महिला सशक्तीकरण।



आरती प्रियदर्शिनी  
वरिष्ठ लेखापरीक्षक  
प्र.नि.ले.प.(कै.)



एक बूढ़ा कारपेंटर अपने अच्छे काम के लिए काफी विख्यात था। उसके बनाए हुए लकड़ी के घर एवं सामान दूर-दूर तक प्रसिद्ध थे, पर अब बूढ़ा हो जाने के कारण उसने सोचा कि बाकी की ज़िंदगी आराम से गुज़ारी जाए। अगले दिन सुबह-सुबह वह अपने मालिक के पास जाकर बोला - “ठेकेदार साहब, मैंने बरसों से आपकी सेवा की है, पर अब मैं बाकी का समय आराम से पूजा-पाठ में बिताना चाहता हूँ। कृपया मुझे यह काम छोड़ने की अनुमति दीजिए।”

ठेकेदार बूढ़े कारपेंटर को बहुत मानता था, इसलिए उसे यह सुनकर बहुत दुःख हुआ। पर वह कारपेंटर को निराश नहीं करना चाहता था। उसने कहा- “आप यहाँ के सबसे बुज़ुर्ग एवं अनुभवी व्यक्ति हैं,

आपकी कमी यहाँ कोई नहीं पूरी कर सकेगा। लेकिन मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि जाने से पहले एक आखिरी काम करते जाइए।”

बूढ़े कारपेंटर ने पूछा - “जी, क्या काम करना है?”

“मैं चाहता हूँ कि आप जाते-जाते हमारे लिए एक और लकड़ी का घर एवं कुछ सामान तैयार कर दीजिए” - ठेकेदार वह बनाने के लिए पैसे देते हुए बोला।

कारपेंटर इस काम के लिए तैयार हो गया। उसने अगले दिन से ही घर का काम करना शुरू कर दिया। परंतु यह जानकर कि यह उसका आखिरी काम है और इसके बाद उसे और कुछ नहीं करना होगा, वह थोड़ा ढीला पड़ गया। पहले जहाँ वह बड़ी सावधानी से

लकड़ियाँ चुनता और काटता था अब बस कामचलाऊ तरीके से ये सारे काम करने लगा। कुछ एक हफ्ते में सारा सामान और घर तैयार हो गया और वह ठेकेदार के पास पहुँचा और कहा - “ठेकेदार साहब, मैंने सारा सामान और घर तैयार कर दिया है। अब मैं काम छोड़ कर जा सकता हूँ।”

ठेकेदार बोला - “हाँ, आप बिलकुल जा सकते हैं। लेकिन अब आपको अपने पुराने छोटे से घर में जाने की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि इस बार जो घर और सामान आपने बनाया है, आपकी बरसों की मेहनत का इनाम है। जाइए, अपने घर-परिवार के साथ उसमें खुशी से रहिए।”

कारपेंटर यह सुनकर स्तब्ध रह गया। वह मन ही मन सोचने लगा, कहाँ मैंने दूसरों के लिए एक से बढ़कर एक घर और सामान बनाए और अपने घर को ही इतने घटिया तरीके से बना दिया। काश मैंने यह घर भी बाकी घरों की तरह ही बनाया होता।

दोस्तो, कब आपका कौन-सा काम किस तरह आपके दिल पर चोट कर सकता है यह बताना मुश्किल है। यह भी समझने की ज़रूरत है कि हमारा काम हमारी पहचान बना भी सकता है और बिगाड़ भी सकता है। इसलिए हमारी कोशिश होनी चाहिए कि हम हर एक काम अपनी मेहनत और लगन के साथ करें, फिर चाहे वह हमारा आखिरी काम ही क्यों न हो।

दोस्तो, हर एक काम को हर एक चुनौती के रूप में स्वीकार करना चाहिए। अपने काम को बड़ा समझना ठीक है, पर दूसरों के काम को कभी छोटा नहीं समझना चाहिए। हम औरों के काम के बारे में बस ऊपरी तौर पर यह जानते हैं कि उसे करने में आने वाली सभी कठिनाइयों के बारे में हमें कुछ खास जानकारी नहीं होती। इसीलिए किसी भी काम को छोटा न समझें और सभी का आदर और सम्मान करें।



मुकेश अंबानी  
डी.ई.ओ  
प्र.म.ले.(ले.प.-I)



देश की शान तिरंगा,

जन-मन का गान तिरंगा,

आज़ादी का गान तिरंगा,

धरती का सम्मान तिरंगा,

साहस का अभिमान तिरंगा,

सैनिक का अभिमान तिरंगा,

सदा लहराता रहे तिरंगा,

हमारा अभिमान तिरंगा।

भारत की पहचान तिरंगा।

गगन की उड़ान तिरंगा।

प्रगति की पहचान तिरंगा।

चक्र का निशान तिरंगा।

शहीदों का गौरव तिरंगा।

यह भारत की शान तिरंगा।



संजीव चंद्र पाठक  
स.ले.प.अ./ऑडिट-II



सारा संसार बंधा है बंधन से  
हर इंसान बंधा है बंधन से।

बंधन अपने जीवन साथी से  
बंधन अपनी संतानों से  
बंधन अपने प्रेम से  
बंधन अपने सपनों से।

कहीं यह बंधन रक्षा का  
कहीं यह बंधन सेवा का  
कहीं यह बंधन स्नेह का  
कहीं यह बंधन कर्तव्यों का।

सभी बंधे हैं बंधन से  
ग्रह-उपग्रह बंधे हैं बंधन से

हर परमाणु बंधा है बंधन से  
यह सृष्टि बंधी है बंधन से।

प्यारे लगते कभी ये बंधन  
जंजीर लगते कभी ये बंधन  
पर चाहते हैं सभी ये बंधन  
देकर अपना तन-मन-धन।

किंतु जीवन की अंतिम वेला में  
असहाय, निश्चेत, निष्प्राण हो  
हर जीवन हो जाता है  
हर बंधन से मुक्त।



सुनील कुमार  
स.ले.प.अ.  
म.ले.(ले.प.-II)



आज शायद ही विश्व में ऐसा कोई देश होगा जो कोरोना की मार से नहीं जूझ रहा हो। कोरोना ने पूरे विश्व को कमजोर बनाकर रख दिया है। क्या कोई भी देश शक्तिशाली बनने के लिए इतना बड़ा कदम उठा सकता है जिसमें न जाने कितने लोगों की जानें चली गईं, न जाने कितने बेघर हो गए, साथ ही साथ जिनमें कितने ऐसे मासूम दुधमुंहे बच्चे थे जिन्होंने अपने माता-पिता का प्यार तक नहीं देखा और उन्हें कोरोना काल में खो दिया। कोरोना काल में कुछ सकारात्मक व नकारात्मक अनुभव भी देखने को मिले। ऐसे परिवार जिन्होंने समय के अभाव में कभी एक साथ बैठकर समय व्यतीत नहीं किया था, उन्होंने अपने परिवार के साथ समय गुजारा। एक दूसरे के दोस्त जानकार बने, एक दूसरे को अच्छी तरह से जाना। कोरोना काल में सब अपना - अपना काम करना सीख गए। समय ने यह सिखा दिया कि आत्मनिर्भर बने, आत्मविश्वासी बने तथा सकारात्मक सोच रखे। कोरोना काल के दौरान

कई दृश्य ऐसे भी देखने को मिले जो मन को विचलित करते हैं जैसे कोरोना से मृत्यु हो जाने पर उनकी लाशों का अंतिम संस्कार सम्मानजनक रूप से नहीं कर पाना आदि।

दो वक्त का खाना जुटाना मुश्किल हो गया। फिर भी इंसानों ने इंसानों का दर्द समझा, उनके खाने-पीने का, रहने का इंतजाम किया। साथ ही साथ पूरा सहयोग सरकार ने भी किया। परंतु जिनके अपने इस दुनिया को छोड़कर चले गए, उनका दुःख वही जान सकते हैं। कोरोना अभी खत्म नहीं हुआ है, चल रहा है। यह बहुत ही मुश्किल घड़ी है, पता नहीं हमको कब मास्क व सैनिटाईसर से छुटकारा मिलेगा। यह तो आने वाला समय ही बता सकता है। परंतु इस समय हमें विश्वास रखने, संयम व सहयोग बनाए रखने की सख्त ज़रूरत है।



श्रीमती रेखा मीणा  
सहायक पर्यवेक्षक  
प्र.म.ले.(ले.प.-I)



एक बार की बात है। रोहन नाम का एक लड़का था। वह बहुत ही शरारती था। उसकी शरारतों से पूरे मोहल्ले के लोग परेशान रहते थे। वह शरारती होने के साथ-साथ पढ़ाई और खेल-कूद में भी काफी अच्छा था। उसकी शरारत के कारण पूरे मोहल्ले के लोग उसके पिता के पास शिकायत लेकर जाते थे। रोहन के पिता भी रोहन की शरारतों से बहुत तंग आ चुके थे जिसके कारण मोहल्ले के लोगों से अक्सर रोहन के पिता का झगड़ा होता था।

एक दिन पिता ने रोहन को उसकी शरारत के लिए बहुत डांटा, उसे बाहर खेलने जाने से मना कर दिया और घर पर ही पढ़ाई करने को कहा। रोहन घर पर ही पढ़ाई कर रहा था और उसके पिता टेलीविज़न देख रहे थे। टेलीविज़न पर देश के प्रधानमंत्री मोदी जी का एक ऐड आ रहा था जिसमें वे देश को स्वच्छ रखने के लिए स्वच्छता अभियान के बारे में बता रहे थे। तभी रोहन की नज़र टेलीविज़न पर आ रहे मोदी जी के ऐड पर पड़ी। वह बहुत ही ध्यान से मोदी जी के ऐड को देखने लगा और उनके इस ऐड से बहुत प्रभावित हुआ। उस दिन उसने मन में निश्चय कर लिया कि अब वह भी मोदी जी के इस स्वच्छता अभियान से जुड़ेगा और देश को स्वच्छ करने में उनकी मदद करेगा।

दूसरे दिन रोहन सुबह उठा और मोहल्ले के सभी लोगों को इकट्ठा करके मोहल्ले में सफाई के लिए बोलने लगा। किंतु लोगों को लगा कि रोहन की इसमें भी कोई शरारत होगी और वह उनको परेशान करने के लिए यह सब बोल रहा है। मोहल्ले वालों ने रोहन से कहा कि - “हम लोग तुम्हारी बातों में नहीं आएंगे, तुम बहुत शरारती हो और इसमें भी तुम्हारी कोई शरारत छिपी होगी।” रोहन ने कहा - “मैं कोई शरारत नहीं कर रहा हूँ, सच में मैं देश को स्वच्छ रखने में मोदी जी का साथ देना चाहता हूँ। इसलिए आप लोगों को भी उनका साथ देने के लिए बोल रहा हूँ।” लोग रोहन की बातें सुनकर हंसने लगे और वहाँ से जाने लगे। रोहन ने उनको रोकने की बहुत कोशिश की, किंतु मोहल्ले वालों ने उसकी एक न सुनी और रोहन को डांटते हुए वहाँ से चले गए।

इसके बाद रोहन ने सोचा कि मैं अकेले ही यह काम करूँगा और रोहन ने मोहल्ले में सफाई करना चालू कर दी। लोगों को लगा कि रोहन यह सब जोश में आकर कर रहा है, कुछ देर बाद जब थक जाएगा तो अपने आप शांत हो जाएगा। तीसरे दिन रोहन फिर सुबह उठा और मोहल्ले में सफाई के लिए चल पड़ा। लोगों ने फिर से उसे काम करते देखा तो सोचा कि यह कुछ दिन ऐसा करेगा और फिर थक कर अपना घर चला जाएगा। पर ऐसा नहीं

हुआ। रोहन को ऐसा करते-करते पांच-छः दिन हो गए और वह इस काम में लगा रहा। मोहल्ला काफी हद तक साफ हो गया था। रोहन को इस तरह काम करते और मोहल्ले में सफाई करते देख कर लोगों को लगने लगा कि वह सही कह रहा है। किंतु तब भी लोगों ने उसका साथ नहीं दिया।

फिर अगले दिन वह सुबह उठा और रोज़ की तरह सफाई के काम पर चल पड़ा। इस बार मोहल्ले के एक व्यक्ति ने उसको काम करते देखा और उसका साथ देने के लिए गया। फिर दूसरे व्यक्ति ने रोहन का साथ दिया। अगले दिन फिर एक व्यक्ति ने रोहन का साथ दिया। उन लोगों को काम करते देख मोहल्ले के और कुछ लोग आकर उसका साथ देने लगे जिससे मोहल्ले की सफाई और भी जल्दी होने लगी। फिर कुछ दिन ऐसा

ही चलता रहा। एक दिन जब रोहन सफाई के लिए घर से जाने लगा तो उसके पिता ने उससे कहा कि - “रोहन रुको मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ” और रोहन के पिता ने भी सफाई में रोहन का साथ दिया और सफाई करना शुरू कर दिया।

इस प्रकार एक - एक करके मोहल्ले के सारे लोगों ने रोहन का साथ दिया और सभी सफाई के काम में जुट गए। रोहन को मोहल्ले के सभी लोगों को उसका साथ देते हुए देख बहुत खुशी हुई। उस समय रोहन की एक कोशिश ने मोहल्ले का पूरा नक्शा बदल कर रख दिया था। फिर सारे लोग रोहन का साथ देते हुए मोहल्ले के बाहर जाकर भी लोगों को इसके लिए प्रेरित करने लगे।



दीपक कुमार सिंह  
लेखापरीक्षक  
म.ले.(ले.प.-II)

## !!! दीप जलाएं !!!

आओ मिलकर दीप जलाएं  
तिमिर पर विजय पाकर  
उज्ज्वलता को आगे बढ़ाएं।  
सारी कट्टरता को भुलाकर  
समरसता को आगे बढ़ाएं।

गरीबी-भूख की विकट समस्या  
आओ साथ मिलकर सुलझाएं।  
शोषण-उत्पीड़न से परे चलकर  
समानता सद्भाव को अपनाएं।

हिंसा छोड़ अहिंसा, असत्य छोड़ सत्य  
बापू के इस सन्मार्ग को अपनाएं।  
विखंडनकारी शक्तियों पर विजय पाकर  
पटेल के अखंड भारत को मज़बूत बनाएं।

मिशन मंगल, चांद और शक्ति की सफलता  
की आओ मिलकर खुशियां मनाएं।  
जिन्होंने भारत को गौरवान्वित किया  
उस अब्दुल कलाम के मार्ग पर चलकर  
भारत का सच्चा सपूत कहलाएं ।

पीड़ितों और बेसहारों का सहारा बनकर  
उनकी जिंदगी में भी प्रकाश फैलाएं।  
जिनका न हो कोई उनको हम सभी  
मिलकर अपनाएं।

## आओ मिलकर दीप जलाएं !!!



सुशील कुमार पंडित  
लेखापरीक्षक  
म.ले.(ले.प.-II)



### प्रतिरोधक या इम्युनिटी क्या है?

प्रतिरोधक या इम्युनिटी क्षमता हमारे शरीर का वह कवच है जो बैक्टीरिया, वायरस और अनेक बीमारियों से हमारे शरीर की रक्षा करता है। बुरी आदतों की वजह से या बुढ़ापा आने के कारण शरीर की प्रतिरोधक शक्ति कमज़ोर होने लगती है और जैसे ही प्रतिरोधक क्षमता कमज़ोर होती है, बीमारियाँ शरीर पर धावा बोल देती हैं। यदि आपके शरीर की प्रतिरोधक क्षमता मज़बूत है तो आप ज़्यादातर बीमारियों से बचे रह सकते हैं और एक स्वस्थ जीवन जी सकते हैं।

प्रतिरोधक क्षमता कमज़ोर होने के कौन-कौन से कारण होते हैं?

प्रतिरोधक क्षमता को कैसे प्राकृतिक तरीके से मज़बूत बना सकते हैं?

प्रतिरोधक क्षमता कमज़ोर होने के कारण:-

**1) खराब खान-पान :-** आज के समय में जिस प्रकार जीवन जीने का तरीका और जिस प्रकार का खान-पान ज़्यादातर लोगों का हो चला है, वह हमारी प्रतिरोधक क्षमता को कमज़ोर कर रहा है। लोग बैलेंस डाइट तो दूर सिर्फ और सिर्फ स्वाद के लिए खाना खा रहे हैं, जिसके कारण जंक फूड, फास्ट फूड आदि का सेवन लगातार बढ़ता चला जा रहा है। जंक फूड में केमिकल और फैट की मात्रा बहुत ज़्यादा होती है जो आपके शरीर को और आपकी रोग-प्रतिरोधक क्षमता को नुकसान पहुंचाती है।

**2) कम नींद लेना :-** कई अनुसंधानों से यह बात सामने आ चुकी है कि जब कोई व्यक्ति कम नींद लेता है तो

उसका सीधा असर शरीर के रोग-प्रतिरोधक सिस्टम पर पड़ता है। जब व्यक्ति कम नींद लेना शुरू करता है तो दिमाग के सेल्स कमजोर होने लगते हैं और शरीर में कोर्टिसोल की मात्रा बढ़ने लगती है। इसकी मात्रा बढ़ने से स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है।

**3) गंभीर व्यवहार :-** एक अनुसंधान के मुताबिक, जिन लोगों का व्यवहार ज्यादा गंभीर होता है और जो अपने गुस्से को ज्यादा कंट्रोल करने की कोशिश करते हैं, उनके शरीर में कोर्टिसोल की मात्रा बढ़ती है। कोर्टिसोल बढ़ने के कारण प्रतिरोधक क्षमता कमजोर हो जाती है। इसलिए हमेशा आराम और खुशी से रहना चाहिए। ज़िंदगी में ज्यादा गंभीर व्यवहार रखने से आपके दिमाग पर ही इसका दबाव पड़ता है और आपका स्वास्थ्य भी खराब हो जाता है।

रोग-प्रतिरोधक क्षमता को मज़बूत करने के प्राकृतिक तरीके:-

**1) सही खान-पान :-** प्रतिरोधक क्षमता को मज़बूत रखने के लिए सही खान-पान का होना बेहद जरूरी है। क्योंकि प्रतिरोधक क्षमता को मज़बूत बनाए रखने के लिए विटामिन और मिनरल्स की अति आवश्यकता होती है। यदि आप भोजन में सही डाइट का पालन करते हैं तो यह आपके रोग प्रतिरोधक सिस्टम को मज़बूत बनाए रखने में आपकी सहायता करता है। अपने खाने में हरी पत्तेदार सब्जियाँ और फलों को अवश्य शामिल करें।

**2) पर्याप्त नींद :-** विज्ञान के अनुसार हर व्यक्ति को रोज़ 7 से 8 घंटे की नींद आवश्यक होती है। यदि आप इससे ज्यादा सोते हैं या कम सोते हैं तो दोनों ही अवस्था में आपका नुकसान हो सकता है। इसलिए आपको कोशिश करनी चाहिए कि आप रात में 9 से 10 बजे

तक सो जाएं और सुबह 4 से 5 बजे तक उठ जाएं। सोने के लिए समय निर्धारित कर लें। इस आदत से प्रतिरोधक क्षमता और भी मज़बूत होगी।

**3) योग :-** शरीर को स्वस्थ एवं लचीला बनाए रखने के लिए और प्रतिरोधक क्षमता को मज़बूत करने के लिए योग बहुत ही कारगर होता है। योग करने से हमारे शरीर को कितने फायदे होते हैं, इस बारे में हमें बताने की आवश्यकता नहीं है। अब विज्ञान भी मानता है कि जिम जाने से बेहतर है कि आप योग करना शुरू करें। जब आप योग करना शुरू करते हैं तो यह आपके शरीर को न सिर्फ बाहर से बल्कि अंदर से भी मज़बूत बनाता है। योग करने से प्रतिरोधक क्षमता मज़बूत होती है।

**4) प्राणायाम :-** प्राणायाम भी योग का ही एक हिस्सा है। प्राणायाम में सांस को विभिन्न तरीकों से अंदर-बाहर किया जाता है जिसके कारण शरीर के कई जहरीले तत्व एवं नैनो पार्टिकल्स बाहर निकलते हैं। आप अनुलोम-विलोम और कपाल भाती रोज़ करना शुरू कर दें। यदि आप रोज़ यह दोनों प्राणायाम करेंगे तो आपका फेफड़ा हमेशा स्वस्थ रहेगा एवं दिमाग भी तेज़ हो जाएगा और आपकी प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ेगी।

**5) कसरत :-** कसरत करना एक बहुत अच्छी आदत है। यदि आप रोज़ कसरत करते हैं तो इसके पीछे लगने वाली मेहनत के कारण शरीर की कैलोरी जल जाती है जिसके कारण शरीर से पसीना निकलता है और कोर्टिसोल बाहर निकल जाता है। कसरत करने से न सिर्फ आपका शारीरिक स्वास्थ्य बल्कि आपका मानसिक स्वास्थ्य भी ठीक रहता है तथा यह आपकी प्रतिरोधक क्षमता को मज़बूत बनाती है। जो व्यक्ति रोज़ कसरत करता है उस व्यक्ति की तुलना में कसरत न करने वाले लोगों की प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होती है।

प्रतिरोधक क्षमता को मज़बूत करने के घरेलू नुस्खे:-

**1) अश्वगंधा :-** अश्वगंधा आयुर्वेद की सबसे बड़ी एवं फायदेमंद जड़ी-बूटियों में गिना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि जो व्यक्ति अश्वगंधा का सेवन करता है वह हजारों बीमारियों से दूर रहता है और उसका शरीर भी जल्दी बूढ़ा नहीं होता है। यदि आप रोज़ अश्वगंधा का सेवन करते हैं तो यह आपके इम्यून सिस्टम को बहुत मज़बूत बना देता है और आपके शरीर में ऊर्जा को भी बढ़ाता है। जो व्यक्ति अश्वगंधा का सही नियमों के साथ प्रयोग करता है उस व्यक्ति का शरीर लंबे समय तक बलवान और जवान बना रहता है।

**2) आंवला :-** आंवला को आयुर्वेद में अमृत फल भी कहा गया है। ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि आंवले में विटामिन-सी की भरपूर मात्रा होती है। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि 15 संतरों में जितना विटामिन-सी होता है उतना विटामिन-सी अकेले एक ही आंवले में होता है। विटामिन-सी इम्यून सिस्टम को मज़बूत बनाने में बहुत ज़रूरी तत्व माना जाता है। यदि आप रोज़ आंवले का सेवन किसी भी रूप में करते हैं तो यह आपके इम्यून सिस्टम को मज़बूत बनाता है। आप चाहें तो आंवले को मुरब्बे के रूप में या अचार के रूप में या इसके जूस के रूप में भी सेवन कर सकते हैं।

**3) गिलोय :-** गिलोय को आयुर्वेद में अमृत भी कहा जाता है जिसका मतलब होता है अमृत बेल यानी कि यह पौधा किसी अमृत के समान है। गिलोय में एंटी ऑक्सिडेंट और विटामिन-सी जैसे तत्व पाए जाते हैं जो शरीर में पैदा होने वाले फ्री रेडिकल्स को नष्ट कर देते हैं। गिलोय के सेवन से खून की सफाई भी होती है और विटामिन-सी की प्रचुर मात्रा होने के कारण इम्यूनिटी को बूस्ट करने में भी मदद करता है। इससे और भी कई

फायदे आपके शरीर को मिलते हैं। इसका इस्तेमाल करने के लिए आप गिलोय का पाउडर बाज़ार से खरीद लें और सुबह खाली पेट एक गिलास पानी में एक चम्मच गिलोय का पाउडर मिलाकर पिएं तो आपकी इम्यूनिटी बहुत मज़बूत हो जाएगी।

**4) च्यवनप्राश :-** च्यवनप्राश में 100 से भी ज़्यादा जड़ी-बूटियों एवं तत्वों का इस्तेमाल किया जाता है। यदि सुबह खाली पेट एक चम्मच च्यवनप्राश का सेवन रोज़ किया जाए तो यह इम्यून सिस्टम को मज़बूत बनाता है, साथ ही कई एलर्जी और इनफेक्शंस को भी समाप्त कर देता है। जिन लोगों को कम स्टेमिना और थकान की समस्या होती है उन लोगों के लिए च्यवनप्राश बहुत ही फायदेमंद होता है। खासकर पुरुषों को च्यवनप्राश का सेवन अवश्य करना चाहिए।

**5) हल्दी वाला दूध :-** इम्यूनिटी बढ़ाने के लिए बहुत ज़्यादा मेहनत न करनी पड़े तो आप बस इस नुस्खे का रोज़ प्रयोग करें। अगर आप रोज़ रात में सोने से पहले एक गिलास गाय के दूध में आधा चम्मच हल्दी पाउडर मिलाएं और एक चुटकी काली मिर्च मिलाकर इसे रोज़ पीना शुरू करें तो आपकी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाएगी। हल्दी और काली मिर्च का प्रभाव आपके शरीर के दोषों को तो दूर करेगा, साथ ही यह आपकी इम्यूनिटी को काफी मज़बूत बना देगा।

**6) आयुर्वेदिक काढ़ा :-** आयुर्वेद में काढ़े को बहुत महत्व दिया गया है। यह आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बहुत मज़बूत बनाता है। इसका सेवन हमेशा सुबह या शाम को खाली पेट करना होता है।

**काढ़ा बनाने की विधि :-** (1). 5 तुलसी के पत्ते (2). 5 काली मिर्च (3). अदरक (4). शहद (5). दालचीनी (6). मखाना। अब 1 कप पानी को गर्म करें, साथ में इन 6

सामाग्रियों को उसमें डाल दें और अच्छी तरह से उबालें जब तक यह पानी आधा कप न हो जाता है। अब इसको छान कर गर्म-गर्म सेवन करें।

**7) बाज़ार का खाना :-** हमेशा घर का खाना खाएं और बाहर के दूषित खाने से बचें। बैलेंस डाइट को अपने जीवन में शामिल करें।

**8) धूम्रपान निषेध :-** शराब, धूम्रपान अथवा किसी भी प्रकार की नशीली चीज़ों का सेवन बिलकुल न करें। इन चीज़ों के सेवन से रोग प्रतिरोधक क्षमता कमज़ोर होती है और ये चीज़ें बीमारियों को बुलावा देती हैं।



मुकेश अंबानी  
डी.ई.ओ  
प्र.म.ले.(ले.प.-I)



एक प्रसिद्ध राजा था जिनका नाम रामधन था। अपने नाम की ही तरह प्रजा-सेवा ही उनका धर्म था। उनकी प्रजा भी उन्हें राजा राम की तरह पूजती थी। राजा रामधन सभी की निष्काम भाव से सहायता करते थे फिर चाहे वह उनके राज्य की प्रजा हो या अन्य राज्य की। उनकी ख्याति सर्वत्र थी। उनके दानी स्वभाव और व्यवहार के गुणगान उसके शत्रु राजा तक करते थे। उन राजाओं में एक राजा था भीम सिंह जिसे राजा रामधन की ख्याति से ईर्ष्या थी। ईर्ष्या के कारण उसने राजा रामधन को हराने की एक रणनीति बनाई और कुछ समय बाद रामधन के राज्य पर हमला कर दिया। भीम सिंह ने छल से युद्ध जीत लिया और रामधन को जंगल में जाना पड़ा। इतना होने पर भी रामधन की

लोकप्रियता में कोई कमी नहीं हुई थी। हर जगह उन्हीं की बात चलती थी जिससे भीम सिंह को चैन न था। उसने राजा रामधन को मृत्युदंड देने का फैसला किया। उसने ऐलान किया कि जो राजा रामधन को पकड़ कर उसके सामने लाएगा वह उसे सोने की सौ दीनार देगा।

दूसरी तरफ, राजा रामधन जंगलों में भटक रहे थे। तब उन्हें एक राहगीर मिला और उसने कहा - “भाई, तुम इसी जगह के लगते हो। क्या मुझे राजा रामधन के राज्य की तरफ का रास्ता बता सकते हो?” राजा रामधन ने पूछा - “तुम्हें क्या काम है राजा से?” तब राहगीर ने कहा - “मेरे बेटे की तबीयत ठीक नहीं है, उसके इलाज में सारा धन चला गया। सुना है राजा रामधन सभी की मदद करते हैं तो सोचा उन्हीं के पास जाकर याचना

करूँ।” यह सुनकर राजा रामधन राहगीर को अपने साथ लेकर भीमसिंह के पास पहुँचे। उन्हें देख दरबार में सभी अचंभित रह गए।

राजा रामधन ने कहा - “हे राजन, आपने मुझे खोजने वाले को सौ दीनार देने का वादा किया था। मेरे इस मित्र ने मुझे आपके सामने पेश किया है। अतः इसे

सौ दीनार दे दीजिए।” यह सुनकर राजा भीम सिंह को अहसास हुआ कि राजा रामधन सच में कितने महान और दानी हैं। उसने अपनी गलती को स्वीकार किया, साथ ही राजा रामधन को उनका राज्य लौटा दिया और सदा उनके दिखाए रास्ते पर चलने का फैसला किया।

इसी को कहते हैं “कर भला तो हो भला।”



प्रभात हंसदा,  
लेखापरीक्षक  
प्र.म.ले.(ले.प.-I)



1. इतनी जल्दी दुनिया की कोई चीज़ नहीं बदलती है,  
जितनी जल्दी इंसान की नीयत और नज़रें बदल जाती हैं।
2. अच्छा इंसान कभी भी मतलबी नहीं होता,  
बस वह दूर हो जाता है उन लोगों से जो उसकी क़दर नहीं करते।
3. रिश्ते बरकरार रखने की सिर्फ एक ही शर्त है कि  
किसी की अच्छाइयां पसंद नहीं हैं तो उसकी कमियों की अवहेलना न करें।
4. मतलबी इंसान की गलत मांग और अनुरोध पर,  
समय रहते अंकुश न लगाया तो अंत में असहाय हो जाएंगे।
5. आप भले ही कितने बलवान और सत्ताधारी हो,  
लेकिन अधर्म के साथ हो तो आपकी सारी शक्ति निष्फल हो जाएगी।

6. अपने अनुयायियों को इतना महत्वाकांक्षी मत बना दें कि आपकी शक्ति का दुरुपयोग कर स्वयं नाश कर सर्वनाश को आमंत्रित कर दें।

7. संपत्ति, शक्ति व सत्ता का दुरुपयोग और दुराचारियों का साथ, अंत में स्वयं नाश का दर्शन कराता है।

8. मुद्रा, मदिरा, मोह और मृदुला से ग्रसित व्यक्ति का निर्णय विनाश की ओर ले जाता है।

9. हर कार्य में छल, कपट व प्रपंच रचकर आप हमेशा सफल नहीं हो सकते हैं।

10. यदि आप नीति, धर्म व कर्म का सफलतापूर्वक पालन करेंगे तो विश्व की कोई भी शक्ति आपको पराजित नहीं कर सकती है।

11. इंसान की अच्छाई पर लोग खामोश रहते हैं, लेकिन बड़ाई उनकी बुराई पर हो तो गूंगे भी बोल पड़ते हैं।

12. गलती नीम की नहीं कि वह कड़वा है, खुदगर्ज जीभ की है जो उसे हमेशा मीठा पसंद है।

13. कपड़े और चेहरे दोनों अक्सर झूठ बोला करते हैं, इंसान की असलियत तो वक्त बताता है।

14. किसी को रुलाकर आज तक कोई कभी न हँस पाया है, यह विधि का विधान है जिसे आजतक कोई न समझ पाया है।

15. मुँह से माफ़ करने में किसी को वक्त नहीं लगता, पर दिल से माफ़ करने में सारी उम्र बीत जाती है।

16. याद रखें साहब! जब तक आप काम के हैं, लोग आपको पहचानेंगे, क्योंकि याद रहें, दिया जलने के बाद माचिस की तिल्ली फेंक दी जाती है; इसलिए अपनी मर्यादा सदा संभाल के रखें।

17. माचिस किसी दूसरी चीज़ को जलाने से पहले खुद को जलाती है,

ईर्ष्या से किसी का अपमान करने से पहले खुद को अपमानित होना पड़ता है।

18. यह ऐसा युग है जिसमें धर्म और भाषा के नाम पर लड़ने को सभी तैयार हैं,  
पर धर्म और भाषा की मर्यादा को बनाए रखने के लिए कोई भी तैयार नहीं है।

19. सत्य और तथ्य में ज़मीन-आसमान का अंतर है,  
तथ्य सत्य को छुपा सकता है, मगर मिटा नहीं सकता।

20. नमक की तरह कड़वा सत्य बोलने वाला सच्चा मित्र बन सकता है,  
लेकिन मीठी-मीठी बात करने वाले चापलूस ही हो सकते हैं, इसका इतिहास गवाह है।

21. हर सत्य की इच्छा होती है कि वह कभी झूठ से न हारे।

22. नफरतों के शहर में चालाकियों के डेरे हैं, यहाँ वे लोग रह सकते हैं,  
जो तेरे मुँह पर तेरे हैं और मेरे मुँह पर मेरे हैं।

23. बेशक है, सत्य बोलकर किसी का दिल तोड़ दो,  
लेकिन झूठ बोलकर किसी का भरोसा मत तोड़ो।



स्वामी दयानंद कुमार  
व.ले.प.  
प्र.नि.ले.प.(कें.)



हिंदी पखवाड़ा-2021 के समापन समारोह में भाग लेते हुए कार्यालय के अधिकारी व कर्मचारी गण





हिंदी पखवाड़ा-2021 के समापन समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)  
महोदया



हिंदी पखवाड़ा-2021 के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता महालेखाकार (ले.प.-I) महोदय तथा प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) महोदया से पुरस्कार ग्रहण करते हुए।





हिंदी पखवाड़ा-2021 के समापन समारोह के अवसर पर आयोजित विभिन्न सांस्कृतिककार्यक्रमों की झलक



हिंदी पखवाड़ा-2021 के समापन समारोह के अवसर पर आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद लेते हुए कार्यालय के अधिकारी व कर्मचारी गण



राजभाषा परिवार (बाएं से ) - श्री. देव प्रकाश गुप्त (हिं.अ.), कु. मासुकी अख्तर (क.अ.), कु. वंदना एस (क.अ.), कु. सोनाक्षी सक्सेना (क.अ.), श्रीमती अदितिका (हिं.अ.), कु. नूपुर कुमारी (क.अ.), श्री. एस धनराजन (हिं.अ.)



हिंदी पखवाड़ा-2021 के उपलक्ष्य में आयोजित 'श्रुतलेखन', 'मौखिक प्रश्नोत्तरी' तथा 'अनुवाद' प्रतियोगिताओं के दृश्य





हिंदी पखवाड़ा-2021 के अवसर पर आयोजित 'वार्तालाप' प्रतियोगिता के दृश्य





दिनांक 29.09.2021 तथा 30.09.2021 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में ध्यानमग्न अधिकारी व कर्मचारी गण





हिंदी पखवाड़ा-2021 के उपलक्ष्य में आयोजित 'चित्र देखकर कहानी लिखना' प्रतियोगिता की झलक



हिंदी पखवाड़ा-2021 के समापन समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए महालेखाकार (ले.प.- II) महोदय



हिंदी पखवाड़ा-2021 के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता महालेखाकार (ले.प.-I) महोदय से पुरस्कार ग्रहण करते हुए





हिंदी पखवाड़ा-2021 के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) महोदया से पुरस्कार ग्रहण करते हुए





हिंदी पखवाड़ा-2021 के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता उप महालेखाकार महोदय से पुरस्कार ग्रहण करते हुए





हिंदी पखवाड़ा-2021 के समापन समारोह के अवसर पर आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों की



झलक



